समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

▸ मई २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०५

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की मीटिंग

हिन्दुस्तान क्लब, 24 अप्रैल 2010, शनिवार

दायें से रा.उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व रा.अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, कौस्तुभ जयंती अध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया

देश-काल-समाज की विभूतियों को श्रद्धांजलि

आचार्य महाप्रज्ञजी

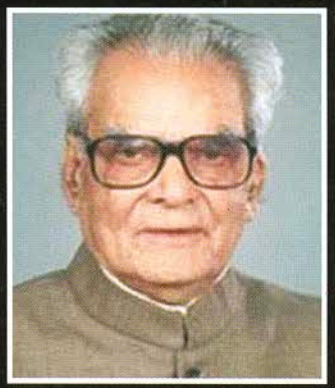

पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत

श्यामानन्द जालान

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦मई २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ५ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
एकला चलो : कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर	५
चिट्ठी आई है	६
3G कैसा हो समाज का – नन्दलाल रुँगटा	७
अपनी बात – शम्भु चौधरी	८
हमें यह अभिशाप मिटाना होगा – रामअवतार पोद्दार	९
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की मीटिंग	१०
डायरेक्टरी उपसमिति की बैठक	१३
समाज के प्रत्येक माननीय सदस्यों से..... – कमल नोपानी	१४
बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति – लोहिया जयन्ती	१५
युवा मंच दर्शन – प्रमोद्ध सराफ	१६
सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों की सूची	२१
लोक–इतिहास के प्रेरणा पुरुष : गोविंद अग्रवाल – डॉ. दुलाराम सहारण	२२
कविता : प्रेमलता खड़ेलवाल की तीन कविताएँ	२६
पथिक – जयकुमार रुसवा	२७
ज़िन्दगी की धूप–छाँव – श्रीमती सुमन बैगानी	२७
श्रद्धांजलि : अहिंसा के पुजारी आचार्य महाप्रज्ञ जी	२८
श्री शेखावत भारतीय राजनीति में एक नई मिसाल	२९
श्यामानन्द जालान नहीं रहे!	३०
कविता : कूड़ा – नरेन्द्र जैन	३१
भारतीय सेवा हेतु चयन मारवाड़ी छात्र–छात्राओं को बधाई	३२
चुटकुले	३२
युगपथ चरण : अग्र लक्ष्मी ज्योति यात्रा	३३
श्री बी. के. सिह का नागरिक अभिनन्दन	३३
श्रीमती श्वेता टिबड़ेवाल अध्यक्ष निर्वाचित	३३
ईश्वर जैन सम्मानित	३३
विजय स्मृति भवन के निर्माण	३३
आलम बाजार : श्री श्याम मंदिर भूमि–पूजन	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयन्ती के अवसर पर

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे

कविवर रवीन्द्रनाथ ठकुर

बंगला में

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तॅबे एकला चलो रे।
तॅबे एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे।।
यदि केउ कॅथा ना कॅय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि सबाइ थके मुख फिराये, सबाई करे भय–तबे परान खुले,
ओ तुई मुख फुटे तोर मनेर कॅथा एकला बलो रे।।
यदि केउ कॅथा ना कॅय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि गहन पथे जावार काले केउ फिरे ना चाय–
तबे पथेर काँटा,
ओ तुई रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे।।
यदि आलो ना धरे, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि झड़बादले आँधर राते दुआर देय घरे–
तबे वज्रानले,
आपॅन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे।।

साभार : kavimanch.in

चिट्ठी आई है :

अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे प्रवासी समाज

समाज विकास अप्रैल १० में श्री संजय हरलाल जी का लेख अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे प्रवासी समाज पढ़ कर ऐसा लगा कि आपने हमारे जैसे कई लेखकों की आँखें खोल दी। मारवाड़ी समाज के लोगों ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य जनता के लिए किए हैं और कर भी रहे हैं पर मातृभूमि को वास्तव में भूल रहे हैं। इस भौतिकता की चकाचौंध में अपने मूल से उखड़ रहे हैं। वर्ष में एक बार प्रवासी भाई को अपनी मातृभूमि में आकर उसका दु:ख–दर्द समझना चाहिये। जात जडूला या अपने इष्ट स्थान पर आकर समस्याओं से रुबरु होकर मातृभूमि के बारे में स्वस्थ चिंतन करना चाहिये। दुर्भाग्य की बात हैं कि आज का युवक **''घर का जोगी जोगना, गांव का सिद्ध''** के प्रबल पोषक बनते नजर आ रहे हैं। अपनी मातृभूमि को भूल कर भौतिकता के भंवर में अपनी जगह को पुष्ट बना रहे हैं। इस बेबाक और स्पष्ट लेख के लिए बधाई।

– नागराज शर्मा
पीलानी, राजस्थान
फोन–01596 242935

भाषा रो प्रश्न भी जोड़णो था

श्री संजय हरलालका का ओ लेख सर्वश्रेष्ठ कोटि रो है किन्तु इण में भाषा रो प्रश्न भी जोड़णो थो। संस्कृति रो मूल आधार भाषा हुवै। महानगरीय संस्कृति अर ग्रामीण संस्कृति रो अन्तर इणी हेतु है कै आपा महानगर में मूल राजस्थान री भाषा बिसरावा। तेरो पर्यवेक्षेण, विषय चुनाव, अभिव्यक्ति अत्यन्त दृढ़ है। बधाई।

– अम्बु शर्मा
''नैणसी'' राज.मा.पत्रिका
205, एस.के. देव रोड,
श्रीभूमि, कोलकाता–48

समाज में फिजूलखर्ची एवं दिखावा

समाज विकास के ताजा अंक में रुँगटा के विचार पढ़े। बहुत ही सामयिक एवं सारगर्मित आपके विचारों से मैं भी सहमत हूँ। डॉ० राम मनोहर लोहिया, मारवाड़ी समाज के लिए धरोहर हैं। उनका भारत के स्वाधीनता के आंदोलन में योगदान अविस्मरणीय है। गोवा का मुक्ति आंदोलन उनके जीवन की अद्‌भुत उपलब्धि है।

डॉ० लोहिया को मारवाड़ी समाज अगर सही मायने में समझ सका तो यह हमारे लिए सौभाग्य की बात होगी। पिछड़ावाद की राजनीति के भविष्यवक्ता डॉ० लोहिया अमर हैं। दलितों के मसीहा कहे जानेवाले डॉ० भीमराव आम्बेडकर पूरे देश में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब हुए थे। संविधान सभा की अध्यक्षता उनके लिए चुनौती थी, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। मारवाड़ी समाज का राजनीति में आना समय की माँग है। पूरे संसार के हर क्षेत्र में बड़े फैसले राजनीति के माध्यम से हो रहे हैं। उद्योग, विज्ञान, व्यापार, संस्कृति के क्षेत्र में सरकारें फैसले करती हैं एवं सरकारें राजनेता बनते हैं। आपका आकलन बिल्कुल सही है, समाज को जागरुक रहकर देश के अंदर अपनी राजनीतिक पहचान बनानी है, तभी हम आनेवाली पीढ़ी को सुरक्षित रख सकेंगे। यह हमारा सामाजिक दायित्व भी बनता है। यह समाज का सौभाग्य होगा। आपको एक कार्यकाल तक समाज का नेतृत्व करना है, यह मेरी अपील है। आपके कार्यकाल में कोलकाता में एक अति आधुनिक सम्मेलन भवन बन पाए। आनेवाले समय में देश के लिए मारवाड़ी समाज को बहुत युद्ध करना है। हमारा इतिहास बहुत ही समृद्ध एवं क्रांतिकारी हैं। प्रशासन में अभी काफी लोग हैं, उन्हें भी समाज के प्रति संवेदनशील बनाना होगा। पूरे देश में प्रशासनिक सेवा में लगे लोगों का एक सम्मेलन आप बुला सकें तो इससे मारवाड़ी समाज का दायरा बढ़ेगा।

समाज में फिजूलखर्ची एवं दिखावा के खिलाफ विचार अभियान काफी मजबूती से चलाने की जरुरत है एवं अतिरिक्त धन को सकारात्मक कार्यो में लगाना चाहिए, यह संदेश भी हमें देना हैं।

– विनोद कुमार अग्रवाल
राजमहल (साहिबगंज) झारखंड

अध्यक्षीय :

3G कैसा हो समाज का

नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

यह बात सर्वविदित है कि मारवाड़ी समाज मूलत: एक व्यापारी कौम के रुप में जाना जाता है। समाज ने देश के प्राय: सभी भागों में व्यापार में अपना न सिर्फ वर्चस्व जमाया बल्कि उस राज्य के आर्थिक कोष को सम्पन्न किया। यह अलग–बात है कि राज्य की माली हालात इतनी दयनीय बनी रहती है कि व्यापारियों द्वारा जमा धन राशि हमेशा कम पड़ती जाती है। समाज ने इसके साथ एक कार्य और किया वह समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण पहचान कायम की, जो हर किसी की जुबान से हम सुनते रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी समाज ने काफी कार्य किया। सम्मेलन की प्रान्तीय शाखाओं ने शिक्षा कोष का निर्माण कर कितने छात्रों को चार्टर एकाउन्टेट, वकील, इंजीनियर या डॉक्टर बना दिया इसके आंकड़े हमारे पास न तो उपलब्ध हैं न ही समाज ऐसे सहयोगी कार्यों का दिखावा पसन्द करता है।

हमें खुशी इस बात की है कि हमारे समाज के लड़के एवं लड़कियाँ अब काफी संख्या में आई.ए.एस, आई.पी.एस एवं आई.आर.एस की परिक्षाओं में उत्तीर्ण होकर देश के विभिन्न स्थानों में सेवा कर रहें हैं। मेरी यह सदा मान्यता रही है कि आने वाले समय में इन लोगों की काफी अहम् भूमिका रहेगी।

मुझे पता है कि इस शिक्षा कोष से पढ़कर कई समाज के युवक आज अच्छे पदों पर हैं। उनकी आय लाखों में आंकी जा सकती है। परन्तु उनसे हमने कभी सहयोग की अपेक्षा नहीं की। परन्तु आज यह वक्त आ गया है कि हम सबको मिलकर सोचना होगा–कि हमारी आगामी नई पोध (3rd Generation) कैसी हो।

हमें खुशी इस बात की है कि हमारे समाज के लड़के एवं लड़कियाँ अब काफी संख्या में आई.ए.एस, आई.पी.एस एवं आई.आर.एस की परिक्षाओं में उत्तीर्ण होकर देश के विभिन्न स्थानों में सेवा कर रहे हैं। मेरी यह सदा मान्यता रही है कि आने वाले समय में इन लोगों की काफी अहम् भूमिका रहेगी।

पिछले दिनों समाज में उच्च शिक्षा का एक नया जज़्बा सामने आया है। समाज के छात्र–छात्राओं की बड़ी संख्या में उच्च शिक्षा की तरफ झुकाव देखा गया, इसमें सरकारी वित्तीय नीति सहायक साबित तो हो ही रही है। सम्मेलन भी यह चाहता है कि उच्च शिक्षा का एक राष्ट्रीय प्रकल्प तैयार किया जाए जिसमें सभी प्रान्तों की न सिर्फ, उसमें भागीदारी हो, बल्कि समाज के कमजोर (योग्य) तबके को इस कोष के द्वारा भरपूर सहायता की जा सके। पिछली कार्यकारिणी में कई सदस्यों के सुझाव इस विषय पर आये हैं। हमारी इच्छा होगी कि सभी प्रान्त भी अपनी तरफ से एक मानसिकता का निर्माण कर इस विषय पर अपने प्रान्त की तरफ से राष्ट्रीय कार्यालय को सुझाव प्रेषित करें, ताकी हम जल्द से जल्द इस कार्य को प्रारम्भ कर सकें। हम सबको मिलकर एक ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे हमारे समाज का कोई छात्र या छात्राएँ धन के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रह जाए। ताकी हम आने वाली नई पोध पर सदा गर्व कर सकें एवं राष्ट्र की प्रगति में हमारे समाज का हर क्षेत्र में योगदान रहे।◆

अपनी बात :

देश-काल-समाज की विभूतियों को श्रद्धांजलि

आचार्य महाप्रज्ञजी

जैन समाज के संत आचार्य महाप्रज्ञ का रविवार को राजस्थान के चुरु जिला के सरदार शहर में ९ मई को दोपहर २.५२ बजे निधन हो गया। वे इनदिनों में चातुर्मास पर थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने दोपहर दो बजे तक श्रद्धालुओं को दर्शन दिया। उसके बाद अचानक उनकी तबियत बिगड़ गई। डॉक्टरों को बुलाया गया, लेकिन उन्होंने शरीर त्याग दिया। उनके निधन की खबर से देश–विदेश में शोक की लहर दौड़ गई है।

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म विक्रम संवत १९७७ (१९२०) में आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी को राजस्थान के झुंझुनू के टमकोर के चोरड़िया परिवार में हुआ था। पिता का नाम तोलारामजी एवं माता का नाम बालूजी था। आपका जन्म नाम नथमल था। बचपन में ही पिताश्री का देहांत हो जाने के कारण माताजी ने ही पालन–पोषण किया। माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं इसी कारण उनमें धार्मिक चेतना का उदय हुआ। आपने धर्म को अध्यात्म के साथ अहिंसा के नये मार्ग पर जाने का चिन्तन दिया।

पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत

जयपुर १५ मई २०१०: देश के पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत का शनिवार को जयपुर के सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में निधन हो गया। शेखावत को पिछले १३ मई की रात सीने में दर्द के बाद सवाई मानसिंह अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू)में भर्ती कराया गया था। भैरों सिंह शेखावत बीजेपी के कद्दावर नेता माने जाते थे। वह १९ अगस्त २००२ से २१ जुलाई २००७ तक देश के उपराष्ट्रपति रहे। वह देश के ११वें उपराष्ट्रपति थे। वह तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रह चुके थे। श्री शेखावत ग्रामीण भारत से जुड़े कर्मठ और समर्पित व्यक्ति थे। श्री शेखावत का व्यक्तित्व विराट था और उनके निधन से देश के सार्वजनिक जीवन का नुकसान हुआ है। उप राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने देश की महत्वपूर्ण सेवा की जो स्मरणीय रहेगी। उनके निधन से भारतीय राजनीति ने एक योग्य, मिलनसार और कुशल राजनेता खो दिया।

श्यामानन्द जालान

श्यामानन्द जालान का २४ मई की रात कोलकाता के एक निजी अस्पताल में देहान्त हो गया। आप पिछले चार–पाँच साल से अस्वस्थ चल रहे थे। आपका योगदान न सिर्फ बांग्ला फिल्म उद्योग में रहा, हिन्दी–बांग्ला नाट्य जगत में आपके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। पेशे से अधिवक्ता श्री जालान के जाने से बंगाल का शिल्पी जगत स्तब्ध हो गया। वकालत का पेशा निभाते हुए रंगमंच के प्रति अपने दायित्व और प्रतिबद्धता को पूरी निष्ठा से निभाने वाले इस रंगकर्मी को **'नए हाथ'** नाटक के लिए १९५७ में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए एवं १९७३ में **संगीत नाटक अकादमी** द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया जा चुका है। श्री जालान भारतीय रंगमंच के एक महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते रहे हैं। बचपन से नाटक से जुड़े श्री जालान एक प्रगतिशील रंगकर्मी, सशक्त अभिनेता एवं सफल निर्देशक थे। इनकी शुरुआत हिन्दी नाटकों से हुई मगर बाद में बंगला में **'तुगलक'** के निर्देशन एवं अँग्रेजी में **'आधे–अधूरे'** के अभिनय के लिए भरपूर सराहना प्राप्त की।

सन् १९५५ में भँवरमल जी, सुशीला जी, प्रतिभा जी के साथ मिलकर **'अनामिका'** की स्थापना की। सन् १९७२ में उन्होंने **'पदातिक'** नाम से एक अलग संस्था को जन्म दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित।

- शम्भु चौधरी

हमें यह अभिशाप मिटाना होगा

रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज में विवाह–सगाई–विवाह की पच्चीसवीं– पचासवीं वर्षगांठ, जन्मदिन की पार्टियां, गीत सम्मेलन जैसे पारिवारिक उत्सवों में जिस तरह से आडम्बर और दिखावे का प्रचलन बढ़ा है।

समय के साथ जीवन के मापदण्ड बदलते हैं, सामाजिक संरचना में भी समय के साथ परिवर्तन स्वाभाविक है। मगर देखने और सोचने वाली बात यह है कि समय के साथ समाज में हो रहे परिवर्तन की दिशा और दशा क्या है इस परिवर्तन की परिणति उत्थान है या पतन, निर्माण है या ध्वंस, जुड़ाव है या भटकाव, हितकर है या अहितकर इस पर विचार करना और यह जानना अत्यन्त आवश्यक है। अगर समाज के प्रधान लोग इस पक्ष में लापरवाह रहेंगे तो निश्चित ही परिणति नकारात्मक ही होगी। समाज की वर्तमान छवि हमें इस बात का आभास भी करवा रही है कि संकेत शुभ परिलक्षित नहीं हो रहे हैं। हमारा यह गौरवशाली मारवाड़ी समाज जो सदाशयता, निष्ठा, कर्मठता, उदारता का प्रतीक माना जाता है। सामाजिक क्षेत्र में सेवा के जितने भी प्रकल्प संचालित हो रहे हैं उनमें अनुपतत: आधे से अधिक को संचालित करने वाला हमारा यह मारवाड़ी समाज अपनी उदारता से सेवा के नये–नये आयाम स्थापित कर ख्याति अर्जित करने वाले समाज में दिखावे और आडम्बर का ऐसा रिवाज आप सोचकर देखें तो निसन्देह आपको यही उत्तर मिलेगा कि–आडम्बर और दिखावे का यह रिवाज (दूसरे शब्दों में कहूं तो वैभव प्रदर्शन) हमारे संस्कारिक, सांस्कृतिक और पारम्परिक पटल पर जलने के दाग सा प्रतीत हो रहा है।

प्रथाओं का बहुत बड़ा प्रभाव सामाजिक संरचना पर पड़ता है। हम पारिवारिक उत्सवों पर होनेवाल खर्चों के विरोधी नही। अपने प्रियजन, परिजनों का उचित आवभगत, उचित स्वागत सत्कार किया ही जाना चाहिए। ऐसे अवसरों पर की जाने वाली धन की फिजूलखर्ची, लाखों की सजावट, लाखों के पण्डाल और स्थान, कीमती आमंत्रण पत्र (जो बाद में डस्टबीन में ही फेंके जाते है), सैकड़ों पकवान (जो अधिकांश धरे ही रहते हैं, भला कोई कितना खायेगा) ये सब धन हमें इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि क्या यह जरूरी है?

हम पारिवारिक उत्सवों पर होनेवाल खर्चों के विरोधी नही। अपने प्रियजन, परिजनों का उचित आवभगत, उचित स्वागत सत्कार किया ही जाना चाहिए। ऐसे अवसरों पर की जाने वाली धन की फिजूलखर्ची, लाखों की सजावट, लाखों के पण्डाल और स्थान, कीमती आमंत्रण पत्र (जो बाद में डस्टबीन में ही फेंके जाते है), सैकड़ों पकवान (जो अधिकांश धरे ही रहते हैं, भला कोई कितना खायेगा) ये सब धन हमें इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि क्या यह जरूरी है?

एक बात गंभीरता से कहना चाहता हूं। केवल भारतवर्ष में ही रहनेवाला मारवाड़ी समाज अपने पारिवारिक उत्सवों को सिर्फ एक वर्ष के लिए सादगी पूर्वक मना कर इन उत्सवों पर किये जानेवाले अनावश्यक खर्च को एकत्र कर अपने पैतृक स्थान राजस्थान के विकास और प्रगति पर लगा दे तो राजस्थान की तस्वीर और तकदीर बदल सकती है। राजस्थान की तस्वीर और तकदीर वह रकम बदल सकती है जो सिर्फ एक रात में रेशमी पर्दे टाँगने और उतारने पर खर्च होती है, वो रकम जो एक रात की जगमगाहट के लिए बल्बों और टूनी लाईटों की लड़ियां जलाने व बुझाने में खर्च होती है। यह वो रकम है जो ग्यारह या इक्कीस पकवान से मनुहार करने की बजाय डेढ़ सौ–दो सौ पकवानों से मनुहार पर खर्च की जाती है। जो रकम किसी एक पूरे प्रान्त की तकदीर और तस्वीर बदल सकती है वह अपव्यय (वैभव प्रदर्शन के नाम पर) में बहे तो उसे अभिशाप कहा ही जाना चाहिए।

मैं पूरे भारत के मारवाड़ी समाज से अपील करता हूँ कि यह अभिशाप, श्राप बन जाए इससे पहले सचेत हो और इस दिशा में चिन्तन–मनन कर समवेत स्वर में यह उद्घोष करें कि – हमें यह अभिशाप मिटाना होगा।◆

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की मीटिंग

हिन्दुस्तान क्लब, 24 अप्रैल 2010, शनिवार

दायें से रा.उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व रा.अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, कौस्तुभ जयंती अध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की मीटिंग २४/४/२०१० शनिवार को अपराह्न ४.३० बजे ४/२ शरत बोस रोड, हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता–२० में सम्पन्न हुई। मीटिंग की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने की।

सभा की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने कहा कि २०१० – ११ राष्ट्रीय कार्यकारिणी की यह पहली मीटिंग है तथा इस बार पिछले मीनिट्स की प्रति नोटिस के साथ सदस्यों को भेजी गयी थी। आपने कहा कि सम्मेलन अपने ध्येय की ओर निरंतर अग्रसर है और नये सदस्य सम्मेलन से जुड़ते जा रहे हैं। गत दिनों सम्पन्न अखिल भारतीय समिति, डायरेक्टरी उपसमिति, राजस्थानी भाषा उपसमिति, राजनीतिक चेतना उपसमिति, उच्च शिक्षा उपसमिति, स्थायी समिति की हुई मीटिंग एवं वहां लिये गये निर्णयों से आपने सदस्यों को अवगत कराया। आज की मीटिंग के लिए तय एजेंडों पर खुली चर्चा का आग्रह सदस्यों से करते हुए आपने कहा कि खुली बहस में जो भी बातें उभरकर सामने आएंगी उसपर विचार करेंगे तथा आम सहमति से निर्णय लेंगे। राज्य शाखाओं के बारे में आपने कहा कि वे शाखाएं जो भी कार्य अपने यहां कर रहे हैं उससे हमें परिचित करायें ताकि समाज विकास में प्रकाशित हो। सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय के बारे में आपने कहा कि मकान मालिक से विवाद के कारण मरम्मत कार्य स्थगित है। कोर्ट के स्तर से भी मरम्मत करवाने की कोशिश हुई किंतु अभी तक नहीं हो पायी है। समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर सेमिनार के बारे में आपने कहा कि श्री कैलाश पति तोदी इन समस्याओं पर गोष्ठियां करवाते रहते हैं। आर्थिक कठिनाई वश समाज के जो मेधावी छात्र – छात्राएं उच्च

सम्मेलन का नया लेपल पीन लगाते हुए तुलस्यानजी एवं रुँगटाजी

अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं वैसे छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करने की मंशा आपने जाहिर की। नौकरशाही और राजनीति के बारे में आपने कहा कि दोनों तरह के लोग अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं अत: हमारा समाज भी राजनीति और नौकरशाही में खास दिलचस्पी ले। आपने कहा कि संरक्षक और आजीवन सदस्यों को डाक से सदस्यता प्रमाण – पत्र भजने की योजना पर भी विचार – विमर्श चल रहा है। इसके साथ ही लेपल पीन भी भेजी जायेगी।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए अपनी कार्यवाही पढ़ी और उसपर अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने वित्त वर्ष के आय व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। साल भर की आमदनी, खर्च, फिक्सड डिपोजिट से हुई आय, कर्मचारियों की सैलरी तथा अन्य ब्यौरे भी दिए।

मीटिंग में भाग ले रहे सभी सदस्यों को लेपल पीन दी गई। मीटिंग में मौजूद सदस्यों के विचार इस प्रकार रहे :–

श्री रामगोपाल बागला : समाज विकास का कागज और छपाई ठीक नहीं है अत: उसमें सुधार लाएं। उच्च शिक्षा की क्या परिभाषा आप लोंगों की है?

श्री विश्वंभर नेवर : एसटेबलिशमेन्ट और मेन्टनेन्स पर औसत खर्च सम्मेलन का कितना है, इसे बताएं? अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष के व्यक्तिगत प्रभाव के कारण ही सम्मेलन से नये सदस्य जुड़ रहे हैं न कि किसी अन्य कारणों से। सम्मेलन का उद्देश्य सिर्फ सदस्य बढ़ाना भर नहीं होना चाहिए। सम्मेलन पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करता है। सम्मेलन अपनी गतिविधियां तेज करे ताकि सदस्य स्वत: ही जुड़ें। हमारे पास प्रोग्राम नहीं है अत: ठोस प्लानिंग करके कार्य की शुरूआत करें। समाज विकास एक सामाजिक सांस्कृतिक पत्रिका है किंतु कंटेंट का स्तर घटिया है, उसमें सुधार लाएं। उक्त पत्रिका के प्रिंट लाईन में संपादक के रूप में जिनका नाम आता है उन्हें पत्रिका से कोई सरोकार नहीं। सम्मेलन का मुखपत्र होने के नाते समाज विकास का संपादक किसी पेशेवर व्यक्ति को नियुक्त करें ताकि पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार हो। समाज की उपलब्धियों का बखान पत्रिका में प्रकाशित हो। शिक्षा कोष के गठन का निर्णय स्वीकार योग्य है। आर्थिक सहायता का यश बटोरने के लिए कहीं कोष के गठन पर तो विचार नहीं कर रहे हैं?

श्री बी. एल. बाहेती : समाज विकास हमारे समाज का दर्पण है। व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण पत्रिका के तेवर और कलेवर ढीले हो रहे हैं।

श्री हरि प्रसाद बुधिया : बजट का पैमाना आखिर कितना होना चाहिए? अगले वर्ष खर्च की रकम कितनी होगी?

श्री रतन शाह : समाज विकास के पेज, कंटेट और छपाई को सुधारने के लिए ठोस निर्णय लें। ऑफिस स्टाफ खूब ही दक्ष हो। कार्यालय में एक टाईपिस्ट भी हो। राजस्थानी भाषा का संरक्षण और प्रोत्साहन एक गंभीर विषय है, दूसरी तरफ सम्मेलन से समाज को काफी उम्मीदें हैं। राजस्थानी भाषा के प्रचार – प्रसार के लिये अल्प कालीन और दीर्घ कालीन योजनाएं बने।

श्री सुबीर पोद्दार : कौस्तुभ जयंती शुरू होने के डेढ़ महीने बाद पहली मीटिंग क्यों हुई? कोलकाता में कौस्तुभ जयंती को लेकर क्या हलचल है?

श्री रामनाथ झुनझुनवाला : किस क्लास के छात्रों को उच्च शिक्षा क्षेत्र में आर्थिक सहायता दी जाएगी?

श्री सीताराम शर्मा : प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रांत अनुदान दे रहे हैं। उच्च और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में समाज के जरूरतमंद और मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता की जरूरत है। हमारे पास १० लाख की राशि हमेशा मौजूद हो तथा उस राशि को हमेशा बनाए रखें। आर्थिक सहायता सिर्फ उन्हें दी जाए जो उससे सम्बन्धित मापदंड को पूरा करेंगे। कार्यकारिणी

समिति उच्च शिक्षा कोष के गठन का निर्णय ले।

श्री मोहनलाल तुलस्यान : उच्च शिक्षा क्षेत्र में अनुदान सराहनीय प्रयास है। १० लाख की राशि हमेशा बनाये रखने का इरादा भी प्रशंसनीय है।

श्री नवल जोशी : आर्थिक सहायता देने पर चतुर्दिक सकारात्मक चर्चा होती है।

श्री भानीराम सुरेका : सम्मेलन समरसता को बढ़ावा दे। समाज विकास में स्वास्थ्य पर लेख प्रकाशित हो।

श्री डी. पी. डाबरीवाल ने सम्मेलन भवन के निर्माण के बारे में जानकारी दी।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने वर्षव्यापी कौस्तुभ जयंती की चर्चा करते हुए कहा कि कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रांतों को भेजी गयी है तथा कौस्तुभ जयंती वर्ष पर उन सभी प्रांतों ने कार्यक्रम अपने प्रांतों में करने का आश्वासन दिया है। २५ दिसंबर को कौस्तुभ जयंती समापन से पूर्व ही अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन के शिलान्यास की योजना है। कौस्तुभ जयंती के मौके पर महामहिम राष्ट्रपति को बुलाने की योजना का जिक्र भी उन्होंने मीटिंग में किया। कौस्तुभ जयंती के अवसर पर डाक टिकट जारी होने के बारे में श्री शर्मा ने कहा कि इस दिशा में सम्बन्धित विभाग से बातचीत चल रही है। शिक्षा, उद्यमिता, साहित्य और संस्कृति, खेल और समाज सेवा इस क्षेत्र के प्रसिद्ध पांच हस्तियों को कौस्तुभ जयंती वर्ष में सम्मानित करने की बात भी उन्होंने कही।

सदस्यों के विचारों का उत्तर देते हुए अध्यक्ष ने कहा कि आप लोग यदि अनुमोदित करें तो उच्च शिक्षा समिति पर प्रारूप बना कर उसपर अमल शुरू कर देंगे। आपने कहा कि सम्मेलन यथावत चलने पर खर्च तो होते ही हैं। खुशी इस बात को लेकर है कि सम्मेलन से तीनों तरह के सदस्य जुड़ रहे हैं, केवल धन उपार्जन के लिए सदस्य नहीं बनाये जा रहे हैं। सम्मेलन हमारे सारे गतिविधियों का केंद्र है अत: सदस्यता में इजाफा जरूरी है तथा आपने कहा कि सभी सदस्य सदस्यता बढ़ाने में सहयोग दें और अंग्रेजी के इस वाक्यांश Each one bring one को सामने रखें। राजस्थानी में उत्कृष्ट लेखन के मद्देनजर पुरस्कार के बारे में आपने कहा कि पुरस्कार अब प्रतिवर्ष बढ़ी हुई राशि के साथ देने तथा पुरस्कृत साहित्यकार के आने जाने व ठहरने के खर्च भी देने की योजना है। छात्रवृत्ति के बारे में आपने कहा कि सम्मेलन के सहयोग से समाज के होनहार छात्र पढ़ सकें इससे अधिक और खुशी की बात क्या हो सकती है। हमारा ध्येय समाज सेवा है, नाम कमाना हमारा कदापि मकसद नहीं। उच्च शिक्षा कोष के मद्देनजर आपने कहा कि १० लाख राशि वाले इमरजेन्सी फंड को हमेशा ही बनाए रखने की कोशिश होगी। जणगणना के बारे में आपने कहा कि राजस्थानी भाषा को मातृभाषा के रूप में लिखा जाना चाहिए। समाज विकास पत्रिका के बारे में आपने कहा कि पहले की अपेक्षा इसकी प्रीटिंग, पेपर तथा सामग्री में सुधार हुआ है तथा उक्त पत्रिका को बेहतर बनाने की दिशा में कोशिश जारी रहेगी। दक्ष ऑफिस स्टाफ के बारे में आपने कहा—बेहतर कर्मचारी तलाशने में आप सभी सहयोग करें। ऑफिस स्टाफ से कार्य कराने, परामर्श देने के बारे में आपने कहा कि हमारे महामंत्री और कोषाध्यक्ष निरंतर उनलोगों के संपर्क में रहते हैं। इसके लिए सभी से ठोस सुझाव अपेक्षित हैं।

आपने कहा कौस्तुभ जयंती के अवसर पर उत्कल शाखा ने ७५ जोड़े सामूहिक विवाह के आयोजन का निर्णय लिया है तथा अलग – अलग प्रांत कौस्तुभ जयंती पर ७५०० नये सदस्य बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। डाक टिकट जारी होने के बारे में आपने कहा कि इस दिशा में ठोस प्रयास किये जा रहे हैं। सम्मेलन के १९३५ के कालखंड से अबतक के इतिहास संकलन और प्रकाशन की चर्चा करते हुए आपने कहा इस विषय पर काम शुरू हो चुका है। डायरेक्टरी प्रकाशन के बारे में आपने कहा कि वह लगभग अंतिम चरण में है तथा जून माह की एजीएम मीटिंग में उसे लोकार्पित करने का इरादा है।

सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष ने सभा समाप्त करने की घोषणा की।◆

डायरेक्टरी उपसमिति की बैठक

डायरेक्टरी उपसमिति की प्रथम बैठक सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूंगटा के कार्यालय ४२ए, एक्सप्रेस टावर ८ वां तल्ला, कोलकाता–१७ में दिनांक : २३/४/२०१० शुक्रवार को सायं ५.३० बजे डायरेक्टरी उपसमिति के चेयरमैन श्री रवीन्द्र कुमार लडिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में उपस्थिति इस प्रकार रही :–

१. श्री रवीन्द्र कुमार लडिया २. श्री नन्दलाल रूंगटा ३. श्री संजय हरलालका ४. श्री शम्भु चौधरी ५. श्री विमल चौधरी ६. श्री बाबूलाल धनानियां ७. श्री बाल कृष्ण माहेश्वरी।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए डायरेक्टरी उपसमिति के चेयरमैन श्री रवीन्द्र कुमार लडिया ने सम्मेलन अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा सहित सभी आमंत्रित सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि सभापति श्री रूंगटा ने डायरेक्टरी निर्माण की महत जिम्मेवारी सौंपी थी जिसे अंतिम रूप देने की कोशिश जारी है तथा कुछ महीने के और परिश्रम के बाद डायरेक्टरी प्रकाशन का काम पूरा हो पाएगा। डायरेक्टरी फार्म के वितरण पर आपने प्रकाश डालते हुए कहा कि उक्त फार्म राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों, पदाधिकारियों, अखिल भारतीय समिति के सदस्यों, मारवाड़ी युवा और महिला मंच के सदस्य, मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन, संरक्षक सदस्यों को भेजे गए, जिसमें से ज्यादातर सदस्यों ने फार्म भर कर भेज दिए हैं। कोलकाता से ६ और बाहर के ११ सदस्यों ने अभी तक फार्म भरकर नहीं भेजे हैं, उम्मीद करता हूं कि वे सभी सदस्य भी फार्म भरकर भेज देंगे। डायरेक्टरी रूपरेखा की चर्चा करते हुए आपने कहा वह इसबार सुन्दर कलेवर में प्रकाशित होने जा रही है तथा सारी सूचनाएं व्यवस्थित होंगी। आपने मीटिंग में डायरेक्टरी का प्रारूप आमंत्रित सदस्यों को दिखाया तथा कहा कम्पोज का काम लगभग पूरा हो चुका है। आपने कहा कि डायरेक्टरी में सदस्यों के नाम और पता इतने व्यवस्थित तरीके से दिये जाएंगे कि किसी को नाम और पता खोजने में असुविधा न हो। आपने कहा कि हमारे जो संरक्षक सदस्य हैं उनके नाम, फोटो और पता डायरेक्टरी में प्रकाशित होंगे। आपने कहा सभापति ने सीमित खर्च में डायरेक्टरी प्रकाशन का जिम्मा मुझे सौंपा था जिसे निर्वाह करने की भरसक कोशिश कर रहा हूँ। डायरेक्टरी बेहतर रूप में प्रकाशित करने संबंधित सुझाव आपने सदस्यों से मांगा। डायरेक्टरी में १९३५ से अबतक के सभी राष्ट्रीय अध्यक्षों और राष्ट्रीय महामंत्रियों के नाम, अधिवेशन स्थल के नाम सहित प्रकाशित करने की बात करने की बात भी आपने कहीं।

सभापति श्री रूंगटा ने कहा कि हमलोगों की कोशिश होगी की मई में या उसके बाद किसी बड़े कार्यक्रम में डायरेक्टरी को लोकार्पित कर दें। सभापति ने डायरेक्टरी को सूचनात्मक रूप से और भी बेहतर बनाने की सलाह सदस्यों से मांगी।

बैठक में उपस्थित सदस्यों के सुझाव इस प्रकार रहे।

श्री विमल चौधरी : डायरेक्टरी के प्रकाशन से समाज में जागरूकता आएगी। अपने समाज द्वारा जो भी निर्मित हास्पीटल और धर्मशाला है उसका पता भी डायरेक्टरी में प्रकाशित की जाए।

श्री बाबूलाल धनानियां : बंगाल के छोटे से छोटे गांव में समाज के सदस्यों द्वारा निर्मित स्कूलों की जानकारी डायरेक्टरी में हो।

श्री बालकृष्ण माहेश्वरी : लड़िया जी डायरेक्टरी निर्माण की दिशा में आप बेहतर कार्य कर रहे हैं।

अन्त में श्री रवीन्द्र कुमार लडिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रूंगटा को अपने कार्यालय में मीटिंग हेतु स्थान उपलब्ध कराने तथा उपस्थित सभी सदस्यों को अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर सभा में पधारने के लिए धन्यवाद देते हुए बैठक समाप्त की।◆

समाज के प्रत्येक माननीय सदस्यों से

विशेषकर उच्च वर्ग, महिलाएँ एवं युवा वर्ग से अपील

– कमल नोपानी, प्रान्तीय अध्यक्ष
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

एक बार सोचें, क्या ये सब ठीक है? हम किस तरफ बढ़ रहे हैं? ऐसा करने से समाज के मध्यम परिवार पर ज्यादा दबाव तो नहीं पड़ रहा है? आपके विचार समाज को नई दिशा दे सकते हैं। आज जरुरत है हमें एक ठोस निर्णय लेने की।

हम आपके खर्च को रोकना नहीं चाहते, हम बेटी को दिये दहेज का विरोध नहीं करते, हमें आपके द्वारा किये किसी आयोजन से, स्वागत सत्कार से, खातिरदारी, तिलक, मिलनी किसी से कोई शिकायत नहीं है, मगर पूरे ध्यान से सोच विचार कर बतायें की क्या निम्न चीजों को बढ़ावा देना जरुरी है, क्या इसे हमें कम नहीं करना चाहिये, क्या हम इसके लिये एक सीमा रेखा नहीं तय कर सकते, निर्णय आपको लेना है, विचार आपको करना है, समाज आपका अपना है, इसे सही दिशा में ले जाना आपका पहला कर्त्तव्य है। आईये हम सब मिलकर विचार करें–आज निमंत्रण कार्ड की भव्यता बढ़ती जा रही है। लोग केवल निमंत्रण कार्ड १००–१५०–२०० या इससे भी अधिक रुपये के बनवाने लगे हैं। क्या हम इसे कम नहीं कर सकते। (२५ रुपये में अच्छे से अच्छे निमत्रण कार्ड बन सकते हैं) खाने में लोग १००–१५० या इससे भी अधिक आइटमें रखने लगे हैं। जबकि मेहमान १५–२० आइटमों से ज्यादा नहीं खा सकते (क्या हम २५ आइटमों में अपने मन लायक व्यंजन नहीं रख सकते) भव्य पण्डालों एवं इसकी सजावट में ही आयोजन का बहुत बड़ा भाग खर्च किया जाता है। इसे भी हम थोड़ा कम कर सकते हैं।

एक ही आयोजन के लिये तीन–तीन, चार–चार पार्टियाँ होने लगी हैं उसे भी हम दो पार्टियों में पूरा कर सकते हैं।

आज सामानों से ज्यादा उसकी पैकिंग में खर्च हो रहा है जिसकी कोई जरुरत नहीं है, हमें ध्यान देना चाहिये।

कार्ड वितरण की पद्धति को बदलनी चाहिए क्योंकि कार्ड वितरण में समय अधिक लगता है एवं परिवार में कम आदमी रहने के कारण कार्ड बाटना कठिन होता जा रहा है। कार्ड को कोरियर द्वारा या स्टाफ द्वारा ही भेजना चाहिए।

साथ–साथ टेलीफोन द्वारा आमंत्रण दिया जा सकता है जो कई महानगरों में प्रचलन में है। शादी रात्रि के बदले दिन में हो, जिससे बिजली, सजावट आदि पर कम खर्च होंगे।

आज धार्मिक आयोजनों में, भागवत एवं कथाओं में २०–३० लाख खर्च कर दिया जाता है। क्या इस खर्च को कम करके सही दिशा में खर्च नहीं करना चाहिये।

इसी कड़ी में एक कार्यक्रम २५ वीं साल गिरह का भी जुड़ गया है, इस कार्यक्रम को सादगी से मनाकर पूरा किया जा सकता है।

अपने खर्च में से उन खर्चों को, जिससे किसी को कुछ हासिल नहीं हो रहा है, जो केवल दिखावे के लिये है थोड़ा कम कर दें तो सबों के सामने एक आदर्श स्थापित होगा, उन पैसों से कितनी गरीब लड़कियों की शादी हो सकेगी, कितने गरीब के बच्चे पढ़ सकेंगे, कितने ही असहायों का इलाज हो सकेगा। यह सब एक सोचनीय एवं विचारणीय विषय हैं। हमें और इन्तजार नहीं करना है आज ही आप अपना सुझाव सम्मलेन कार्यालय में भेजने की कृपा करें ताकि सभी सुझावों को सम्मलित कर, समाज की एक बैठक बुलाकर हम सब मिलकर एक ठोस निर्णय कर संकल्प ले कि इस बैठक में हुए निर्णय का पालन हम सब समाज बन्धु मिलकर अवश्य करेंगे। इस महत्वपूर्ण निर्णय के विचार हेतु पिछले दो माह से प्रयास हो रहा है, जिसके अन्तर्गत बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं समाज के बहुत से प्रबुद्ध लोगों के साथ विचार–विमर्श हुआ है, जिससे सार्थक परिणाम आये हैं।

आपका थोड़ा सा सहयोग समाज को संगठित करने में मील का पत्थर साबित होगा।

व्यक्ति समाज का आइना है, बिना समाज के व्यक्ति की पहचान नहीं है। समाज को साथ लेकर चलना हर व्यक्ति का दायित्व है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज के बिना मनुष्य का अस्तित्व अधूरा है।◆

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

डॉ. राम मनोहर लोहिया

शताब्दी जयन्ती सह व्याख्यान माला

महासचिव प्रह्लाद शर्मा ने बताया कि बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के तत्वावधान में ४ अप्रैल २०१० रविवार को मध्याह्न ३ बजे से बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभागार न्यू डाक बंगला रोड, पटना–१ में महान समाज वादी नेता एवं चिंतक डा० राम मनोहर लोहिया की स्मृति में शताब्दी जयन्ती सह व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रो० डा० श्याम सुन्दर तुलस्यान ने की तथा मंच का संचालन श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाल ने किया।

इस आयोजन के उद्घाटनकर्ता श्री गोपाल कुमार अग्रवाल, सदस्य, बिहार विधान सभा एवं मुख्य वक्ता प्रो० डॉ०के०के० सिन्हा, सेवा निवृत विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, पटना, विशिष्ट अतिथि श्री जी०पी० लाल, सेवा निवृत अभियन्ता प्रमुख, लो०नि०वि० एवं पूर्व अध्यक्ष बिहार पुलिस निर्माण निगम, बिहार सरकार थे। इन सभी मानद अतिथियों को शिक्षा समिति की तरफ से बुके, शॉल एवं मानक प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

व्याख्यान माला का विषय : बिहार को विशेष राज्य का दर्जा– एक अहम जरुरत

स्व0 मंजू गुप्ता पुरस्कार : शिक्षा प्रेमी एवं समाज सेवा के क्षेत्र में श्रीमती मीना गुप्ता, प्रमुख समाज सेविका, पटना सिटी को २०१० का यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

स्व0 आनन्द बजाज पुरस्कार : बिहार माध्यमिक परीक्षा २००९ में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाल छात्र आलोक कुमार, पालीगंज को २१०० रुपये की राशि नगद, प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया।

स्व0 गायत्री देवी मोती लाल सुरेका पुरस्कार : बिहार माध्यमिक परीक्षा २००९ में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा सुभांगी कुमारी, समस्तीपुर को २१०० रु० की राशि नगद, प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया।

स्व0 प्रभुदयाल छापड़िया पुरस्कार : बिहार माध्यमिक परीक्षा २००९ में सर्वोच्च स्थान में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र सोनू कुमार, रोसड़ा को १५०० रु० की राशि नगद, प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया।

स्व. कलावती देवी छापड़िया पुरस्कार : बिहार माध्यमिक परीक्षा २००९ में सर्वोच्च स्थान में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रा रोमी कुमारी, लखीसराय को १५०० रु० की राशि नगद, प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया।

इसी अवसर पर अध्यक्ष प्रो०डा० श्याम सुन्दर तुलस्यान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डा० लोहिया के जीवन पर प्रकाश डाला एवं पुरस्कार पाने वालों को हार्दिक बधाई दी एवं श्री गोपाल कुमार अग्रवाल, विधायक, ठाकुरंगज ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में काम करना एक मानवीय कार्य है जिसे बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति बेहतर कार्य कर रही है साथ ही उन्होंने कहा कि मेधावी छात्रों को पुरस्कार देने से उनका मनोबल बढ़ता है। श्री कमल नोपानी, अध्यक्ष बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना ने कहा कि बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति मेधावी छात्रों को छात्रवृति प्रदान कर बेहतर कार्य कर रहा है अब शिक्षा समिति में एक छात्रावास की जरुरत है जिससे कि बाहर के छात्रों को पटना में रहकर पढ़ने में कठिनाई न हो। तथा महासचिव श्री प्रह्लाद शर्मा ने अपने प्रतिवेदन में बताया कि बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति उच्च शिक्षा हेतु बराबर ऋण छात्रवृति प्रदान कर रही है साथ ही उन्होंने बताया की लोहिया जी एक सच्चे व त्यागी समाजवादी नेता व सांसद थे। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त होने पर ही बिहार एवं राष्ट्र का विकास संभव होगा।

संयोजनक श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने भी बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मॉग की।

अन्त में संयुक्त महासचिव श्री राज कुमार गुटगुटिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।◆

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

युवा मंच दर्शन

मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद्ध सराफ का यह लेख मूलरुप से ''मंच दर्शन'' का विस्तार स्वरूप है। श्री सराफ जी के इस प्रयास से युवाओं को इस मंत्र को समझने में और सुविधा होगी। प्रस्तुत है उनका यह लेख– **सम्पादक**

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के कार्यक्रम और नीतियों के मूल में मंच द्वारा ग्रहण किया गया मंच दर्शन अपने आप में विशेष रुप से महत्व रखता है।

संक्षिप्त रूप में पंचसूत्री मंच दर्शन है :

मंच आधार : जनसेवा

मंच भाव : समाज सुधार

मंच शक्ति : व्यक्ति विकास

मंच चाह : सामाजिक सम्मान व आत्मसुरक्षा

मंच लक्ष्य : राष्ट्रीय एकता एवं विकास।

युवा मंच दर्शन हैं मारवाड़ी समाज की समस्याओं से जूझने का तत्वज्ञान एवं इन्हें सुलझाने की विद्या का बोध। इसमें उपनिषदों व वेदों जैसी दुरुहता नहीं है। यह वह इन्द्रधनुष है जो व्यक्तिवाद के रंगों में सामाजिक व राष्ट्रीय रंगों को जोड़कर तैयार किया गया है। यह दर्शन भगोड़ेपन की वृत्ति को समाप्त करने की सुचेष्टा है। इसमें कोरी आदर्शवादिता का बखान नहीं है बल्कि अनुकरणीय आदर्शों की स्थापना की रुझान है इसमें। यह आडम्बर से रहित है। यह भीड़ का दर्शन नहीं है। भीड़ से हटकर चलने का मंत्रोच्चारण है इसमें जैसे हम आँख के माध्यम से प्रकाश से जुड़ते हैं, वैसे ही यह दर्शन समाज व देश से जोड़ता है। यह दर्शन प्रेरित करता है युवा मंच को, ऐसा दर्पण बन जाने को, जो मारवाड़ी समाज को सही उज्जवल तस्वीर दिखाए।

युवा मंच गुजरा है–बड़ी परिक्षाओं व अग्नियों के दौर से। इसके नेतृत्व वर्ग व कार्यकर्त्ताओं के समूह ने ज्येष्ठ की दुपहरी देखी है। दिनदहाड़े चौराहों की लूट करने वालों से साक्षात्कार हुआ है उनका। बस्तियाँ उजाड़ने की योजनाओं को रेखांकित होते देखा है उन्होंने। उन योजनाओं को कार्यक्रम में परिणत न होने देने की जिम्मेदारियों को वहन किया है उन्होंने। समाज के विरुद्ध जहां–तहां विषवमन होते देखा है, प्रतिरोध के अभाव का दर्द झेला है उन्होंने पाया है कि चर्चित समस्याएँ तथ्यों से परे भी होती हैं सभाओं में, जो वास्तव में समस्या है ही नहीं। आदर्शवाद व त्याग की बातें सिखाने वालों को भोग की लिप्सा में ग्रसित देखा है। तदर्थवाद का साम्राज्य मिला है, कदम–कदम पर। विचारों की भीड़ में सूत्रबद्धता को गुमते देखा है। विचार की कार्य में परिणिति की कौन आशा करेगा, जब तक् वह भाव नहीं पाता। समाज की युवा पीढ़ी हीनभाव से ग्रसित हो, दया की पात्र बनी हुई मिली है। गलत को चुनने में रत पाते देखा है, अधिक लोगों को क्योंकि अहंकार गलत से ही पुष्ट होता है।

खोजी बन कर चलने के पश्चात युवा मंच ने सब कुछ तो नहीं, परन्तु बहुत कुछ जाना है। इसे जानने के लिए नेतृत्व वर्ग ने जोखिम भी उठाई है व कीमत भी चुकाई है। कहने का तात्पर्य है मंच दर्शन का आविर्भाव, सजगता एवं सक्रियता के पथ का राही बनकर हासिल किए गए अनुभवों के परिणाम स्वरुप हुआ है। इसलिए इसमें लोच भी है जो चेतना के दर्पण पर समय की धूल नहीं जमने देगी। मंच दर्शन यथार्थ बोध है, सपना नहीं। यथार्थता के धरातल पर सपने व्यर्थ हो जाते हैं। मंच दर्शन किसी का पुराना लिबास नहीं, बल्कि इसमें एक नया सुर है। यह अनवरत कर्म निरंतर संघर्ष और सतत् निर्भय प्रयास का दर्शन केवल धर्म की शिक्षा ही नहीं देता, बल्कि कर्म की दिशा का संकेत भी करता है। अत: यह कर्मवादी दर्शन से असंतोष व बेचैनी झलकती है, जिसे पौरुष के लक्षण कहना न्यायसंगत होगा क्योंकि जो संतुष्ट है, उसकी क्रिया ढीली और प्रयास शिथिल पड़ जाते हैं।

जनसेवा : युवा मंच दर्शन यह बताता है कि हमें ऐसा वृक्ष बनना है जिसकी छाया में हर जाति व धर्म का

व्यक्ति बैठकर आनन्दित हो सके। ऐसा फूल बनना है जो सुगंधमय वातावरण की सृष्टि करे। युवा मंच को उस नदी में परिवर्तित करना है जो कभी सूखे नहीं एवं हर पल उसमें जलधार बहती रहे। इसलिए युवा मंच का आधार बनाया गया है—जनसेवा कार्यक्रम। जनसेवा कार्यक्रम का सम्पादन संगठन को हर पल जीवंत बनाकर रखेगा एवं नेतृत्ववृंद तथा कार्यकर्त्ताओं को सक्रियता के पथ से डिगने नहीं देगा। सक्रियता की ही सहेली है सजगता। जनसेवा कार्यक्रम की पूंजी युवा मंच को पानी में खींची गई लकीर बनने से बचायेगी। जनसेवा का सूत्र सदैव मंच के कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करेगा—प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाने हेतु, सतत् यात्रा पर कदम बढ़ाने हेतु। जनसेवा बीज बनेगी। बीज कभी विनष्ट नहीं होता। उगेगा सामाजिक व राष्ट्रीय साख के अनगिनत वृक्षों के रुप में। ऐसे वृक्षों को उगाकर मंच की जनसेवा सार्थक सिद्ध होगी। बिना साख के कोई भी हो, सार्थक रुप में कुछ भी नहीं कर पाता है। ऐसी साख के वृक्षों पर सामाजिक सम्मान की बेलें फैलेगी। ऐसे वृक्षों के फूल ही अपनी सुवास में राष्ट्रीय एकता के सुगंधमय वातवरण की सृष्टि करेंगे। इस वातावरण में आत्म—सुरक्षा के मंत्रोच्चारण में कलियुगी दैत्य बाधाएँ उत्पन्न नहीं कर सकेंगे। जनसेवा यानी जनसमस्याओं का समाधान राष्ट्रीय विकास की गठरी के बोझ को हर पल हल्का करता रहेगा। इन कार्यक्रमों का सम्पादन मंच से जुड़े युवाओं के व्यक्तित्व में भी निखार लायेगा। उन्हें कूपमंडूक नहीं बनने देगा। उनकी भी साख बनेगी, जो कुरीतियों के उन्मूलन कार्यक्रम में सहायक होगी। सूखा वृक्ष अगर कोई संदेश दे भी तो राहगीर कभी गौर नहीं करता। साख के खाद से पल्लवित वृक्ष की डाली पर बैठ कर गाया गया समाज सुधार का संगीत कोकिलाकंठी होगा, जो जनसमुदाय को सहज ही आकर्षित कर सकता है। अन्यथा वह संगीत भी कौओं की काँव—काँव बनकर ही रह जाता है व जनसमुदाय के अंर्तमन को छू नहीं पाता है।

पूरे राष्ट्र में समाज द्वारा स्थापित व संचालित सेवा के मंदिर यही संकेत करते हैं कि जनसेवा हमारी विरासत है। इसलिए भी हमारा कर्त्तव्य था कि विरासत को ही मंच का आधार बनाये। फर्क केवल इतना लावे कि अनगिनत लेबलों को हटाकर हमारे पहचान शब्द मारवाड़ी को व्यवहार में लाएँ। तभी बनेगी साख, समाज की। जनसेवा के लिए आवश्यक है— जनसेवा की भावना रखते हुए उपलब्ध साधनों को प्रयोग में लाना। अंधों के उपचार हेतु अस्पताल का निर्माण ही सेवा नहीं है बल्कि अंधो को सहारा देकर सड़क पार करवा देना भी सेवा है। सेवा धन से ही नहीं, श्रम से भी होती है। श्रमदान अर्थदान से बड़ा है, छोटा नहीं। अर्थदान तब तक जनसेवा कहलाने का अधिकारी नहीं, जब तक श्रमदान उसके संग न हो। ऐसे जनसेवा कार्यक्रमों का युवा मंच का आधार घोषित करता है—हमारा दर्शन।

समाज सुधार : समाज सुधार स्वयं से ही प्रारम्भ हो सकता है। इसलिए मंच दर्शन इसे भाव की संज्ञा देता है। जब किसी दूसरे से कहा जाता है तो शब्दों का उपयोग करना होता है, लेकिन स्वयं से जब कुछ कहें तो शब्दों के उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं एवं इसे भाव की दशा कहते हैं। भाव विचार से बहुत बड़ा है। एक बार शब्द का विचार यदि भाव बन जाये तो तदुपरान्त उसमें सघनता आयेगी। भाव के मध्य में ही शाश्वत ज्योति जलती है। युवा मंच दर्शन के अनुसार समाज सुधार का तात्पर्य है—स्वसुधार। स्वआचरण के बल पर ही समाज सुधार के मार्ग पर दीप जलाये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं। यदि समाज सुधार का अखंड दीप जलाना है तो स्वयं को उस दीप की बाती बनाना होगा व साख अर्जित संगठन के घी से उसे प्रज्जवलित करना होगा। अन्यथा पवन का हल्का सा झोंका भी उसे बुझा जायेगा।

सुधार कहाँ? स्पष्ट है कि जहाँ अनीति हो, गलत परम्पराएँ हो, कुरीतियों का बंधन हो, प्रदर्शन का क्रंदन हो। युवा मंच दर्शन चुनौती है— स्वयं को कि सोचो, विचारो, मनन करो और कुरीतियों, अनीतियों, गलत परम्पराओं व प्रदर्शनवृत्ति को दफनाकर स्वसुधार को अपनाओ। हम सुधरेंगे तो ही समाज सुधरेगा। समाज और हम दो नहीं, एक ही हैं। हम समाज में और समाज हमारे में है। स्वसुधार से ही हम मरेंगे व हम जन्म लेंगे। किसी भी संगठन के नेतृत्ववृन्द एवं कार्यकर्त्ताओं का संतुलित व परिष्कृत व्यक्तित्व ही प्रभावोत्पादक होता है। प्रभाव को शक्ति का पर्याय कहा जाता है। अत: हर व्यक्ति व विशेषत: मंच से जुड़े व्यक्तियों में विकास को एक सतत् प्रक्रिया मानता है—युवा मंच दर्शन। यही सतत् प्रक्रिया संगठन को हर दिन नई शक्ति प्रदान करेगी एवं इसी शक्ति के बलबूते पर युवा मंच लक्ष्य की तरफ अग्रसित हो सकता है, चाह की प्यास बुझा सकता है, युवावस्था को पा सकता है एवं आधार को सदैव सुदृढ़ता प्रदान कर सकता है।

व्यक्ति विकास : व्यक्ति विकास कैस? युवा मंच पाठशाला नहीं, बल्कि प्रयोगशाला है–इसी मान्यता में व्यक्ति विकास की राह है। युवा मंच की हर गतिविधि चाहे सभा हो या समारोह, अनुष्ठित कार्यक्रम हो या उसके सम्पादन की तैयारियां, विद्रोह की हलचल हो या विद्रोहाभ्यास–में अंशग्रहण कर व्यक्तित्व को सदैव परिष्कृत करने का प्रयोग करना है हमें। यदि हममें सूझबूझ है, तो नूतन कार्यक्रमों का सफल सम्पादन कर उनके आविष्कारक होने का गौरव भी इसी मंच रुपी प्रयोगशाला मे प्राप्त करें। विचार को भावावस्था के माध्यम से वास्तविकता में परिणत कर दिखने वाला ही आविष्कारकर्त्ता कहलाता है, अन्यथा तो सिरफिरों की गिनती में आकर रह जाता है। आविष्कार विध्वंसात्मक नहीं, सृजनात्मक हो। चूँकि युवा मंच एक सामाजिक संगठन है, अत: हमें ऐसे आविष्कारकर्त्ताओं को प्रोत्साहन नहीं देना है जो समाज की छोटी इकाई परिवार के प्रति गैरजिम्मेवार होकर कोरा प्रयोग करना प्रारम्भ कर दें क्योंकि ऐसे व्यक्तियों द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेवारी के निर्वाह की आशा रखना स्वयं को ही धोखा देना होगा। समाज से जुड़ने हेतु निर्मल चरित्र, सद्व्यवहार व हंसमुख होना आवश्यक है। सही नेतृत्व की क्षमता हासिल करने हेतु सतत् शिक्षण, सोच में तीक्ष्णता, मनन में गम्भीरता, कार्यकर्त्ता होना, कथनी–करनी में सामंजस्य रखना, अहंकार से परे होना, संघर्ष हेतु तत्परता तथा जोखिम उठाने का साहस आदि गुणों को यथाशीघ्र ग्रहण करना होगा। योग प्रशिक्षण व क्रीड़ा कार्यक्रमों में अंशग्रहण स्वस्थता की कुँजी है व स्वविकास के साथ–साथ बढ़ते दायित्वों के वहन हेतु स्वस्थता की अनिवार्यता है।

अराजकता के इस दौर में आत्मसुरक्षा हेतु आवश्यक कलाओं में प्रवीणता प्राप्त करना समय की मांग है। सामाजिक सम्मान की चाह हासिल करने के लिए न केवल स्वयं की सांस्कृतिक विरासत को जानना होगा बल्कि उसे जीवन में रखते हुए राष्ट्रीय संस्कृति की विविधता से भी परिचित होना होगा। सांस्कृतिक आदान–प्रदान के क्रम में हमारी संस्कृति की विशिष्टताएँ उजागर कर इतर समाज की सांस्कृतिक विशिष्टताओं का खोजी बनना होगा। उपरोक्त में परिष्कृत व्यक्तित्व के लक्षणों को भी रेखांकित किया जा सकता है।

युवा मंच प्रथम चरण में अपनी ऊर्जा और शक्ति उन पौधों पर निछावर करें जो खिलने को तैयार हैं। विकसित व्यक्तियों की अच्छी पंक्ति के निर्माण के पश्चात् उन्हें दायित्व सौंपे कि उन युवाओं को भी विकसित करने का प्रयास करें, जिन्होंने पत्थर बने रहने की ज़िद कर रखी है।

राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सम्मान व राष्ट्रीय विकास में से कोई भी कीमत चुकाकर युवा मंच सामाजिक सम्मान व आत्म–सुरक्षा की चाह पूरी करना नहीं चाहेगा, क्योंकि ऐसा करने से युवा मंच दर्शन का मूल तत्व ही नष्ट हो जायेगा। युवा मंच दर्शन जो मार्ग सुझाता है– वह है मध्य का मार्ग। न तो उसमें उग्रवाद की लपटें हैं, और न ही सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीनता। मंच दर्शन संयम सिखाता है।

चुनौती है हमारे समक्ष कि हम अच्छे–बुरे, अमीर–गरीब व जाति–पाँति के भेदों से उपर उठकर नये आदर्श स्थापित करें। हर इन्सान में अच्छाई व बुराई दोनों होती है। फर्क होता है उनके परिणाम में। अत: हमें परहेज बुराई से करना है न कि बुरे से अमीर भी पूजनीय है, उसका जमीर जिन्दा है। हर गरीब में भी जमीर का होना स्वयंसिद्ध तथ्य नहीं है। जात–पात क्यों? हमारी कोई भी जाति क्यों न हो, हम जहाँ बसे हैं, वहां हमें केवल मारवाड़ी के रुप में जाना जाता है। यह शब्द बन गया है–पहचान हमारी। चूँकि संगठन के सुचारु प्रशासकीय संचालन के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु कदम–कदम पर धन की आवश्यकता होती है, अत: धन संगठन संचालन हेतु साधन है। जैसे परिवार पालन के लिए धन की व्यवस्था हेतु वयस्क सदस्य जिम्मेवारी का निर्वाह करते हैं,उसी भावना में संगठन के संचालन हेतु वरिष्ठ नेतृत्व एवं कार्यकर्त्ताओं द्वारा संगठन के कोष संग्रह कार्यक्रम में जिम्मेवारियों का निर्वाह करना आवश्यक है। साख अर्जित संगठनों व कार्यकर्त्ताओं के लिए यह कार्य दुष्कर नहीं रहता लेकिन धन को कभी भी संगठन शक्ति रुप में नहीं पूजा जाना चाहिए। इसीलिए मंच शक्ति धन नहीं, बल्कि व्यक्ति विकास है।

सामाजिक सम्मान व आत्म–सुरक्षा : चाह कैसी चाह ऐसी कि सब दाँव पर लगा देने की हिम्मत हो। जैसे पतंगा दौड़ पड़ता है सभा की तरफ–ऐसी चाह। मिट जाने की चाह–सामाजिक सम्मान की आत्म सुरक्षा हेतु। सामाजिक सम्मान की चाह क्यों? क्योंकि हमारे समाज पर निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा यथार्थ के विपरीत कीचड़ उछाला जाता रहा है। इससे युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होती है व राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में बाधा पहुँचती है। समाज का युवा भी हीन भावना से ग्रसित हो विकास पथ पर पीछे रह जाता है। स्वार्थी तत्वों का दुस्साहस बढ़ता है, यदि हम प्रतिरोध न करें। चाह के अभाव में प्रतिरोध नहीं होना मौन स्वीकृति भी समझा जा सकता है। हर व्यक्ति व समाज को सम्मान से जीने का हक है। अपमान के विष से चुपड़ी रोटी को ठुकरा कर अनजान व दुर्गम स्थलों के भीषण कष्ट झेलने की हमारी विरासत थी। इसलिए मंच चाह है–सामाजिक सम्मान। सामाजिक सम्मान के प्रति संवेदनशीलता का अभाव कहीं हमें तिरंगे का सम्मान करना भी न भुला दे, इसलिए भी यह चाह है हमारी। सामाजिक सम्मान की चाह पूरी करने के लिए मंच को निहित स्वार्थी तत्वों का पुरजोर विरोध करना होगा। निहित स्वार्थी तत्वों में केवल वे ही नहीं आते हैं, जो समाज के विरुद्ध गलत लांछन लगाते हैं। बल्कि वे समाज बंधु भी आते हैं, जो समाज की तस्वीर पर धब्बे लगाने जैसा कार्य करते हैं। अराजकता के इस दौर में आत्म–सुरक्षा की चाह भारतमाता की पुकार भी है। अन्यथा पूरे राष्ट्र पर आतंक हावी हो जायेगा। देश में कानून व्यवस्था दिन प्रतिदिन टूटती जा रहती है। देश के प्रधानमंत्री की सुरक्षा में भी व्यवस्था असफल हो चुकी है। इन हालतों में व्यवस्था से सुरक्षा की आशा करना निरी मूर्खता है, अत: आत्म सुरक्षा का कोई विकल्प नहीं है। अत: मंच दर्शन संदेश देता है–आत्म–सुरक्षा का व चुनौती देता है–उधार ली हुई सांस पर जीने की कोशिश करने वालों को।

राष्ट्रीय विकास एवं एकता : युवा साथी दिग्भ्रमित न हों, इसीलिए प्रत्यक्षत: राष्ट्रीय एकता एवं विकास को मंच का लक्ष्य घोषित किया गया है। चूँकि मारवाड़ी समाज पूरे राष्ट्र में फैला हुआ है, अत:. इसका नैतिक दायित्व है कि राष्ट्रीय एकता के सुदृढ़ीकरण व राष्ट्रीय विकास को गतिशीलता प्रदान करने में प्रभावी भूमिका का निर्वाह करे। अन्यथा कौन करेगा यह कार्य और क्यों करेगा? राष्ट्रवाद के सागर में क्षेत्रवाद की नदी को पहुँचाना है हमें। इस हेतु समाज में राजनैतिक जागृति लाना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता एवं विकास की जड़ों पर प्रहार करने वालों को नेस्तनाबूद करने के लिए हमें यौवन धर्म ग्रहण करना होगा, जिसके लक्षण हैं–सजगता एवं सक्रियता। चूँकि देश की राजनीति पर असामाजिक व राष्ट्र विरोधी शक्तियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, अत: हमें समस्या के मूल में झाँककर समाधान हेतु अग्रसर होना होगा। जहाँ बसते हैं, वहां के धरती पुत्रों की उपेक्षा से राष्ट्रीय एकीकरण नहीं होगा। यदि राष्ट्रीय एकीकरण करना है तो अर्न्तमन को जोड़ना होगा उनसे। उन्हें मुक्त करना होगा जब हम उन धरती पुत्रों के हमदर्द बनें व उस धरती के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करें। राजनीति को विकास के रथ पर आसीन कर प्रत्यंचा पर तीर चढ़ायें और चुनौती दें उन शकुनी रुपी राजनीतिज्ञयों को जिन्होंने जातपात, बहिरागत व जोड़तोड़ के कुटिल पाशे फेंककर राष्ट्रीय एकता को तार–तार कर दिया है।

मंच दर्शन का प्रत्येक सूत्र राष्ट्रीय विकास एवं एकता से जुड़ता है क्योंकि हमारी सर्वोच्च प्रथमिकता इसी को है। अत: राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सम्मान व राष्ट्रीय विकास में से कोई भी कीमत चुकाकर युवा मंच सामाजिक सम्मान व आत्म–सुरक्षा की चाह पूरी करना नहीं चाहेगा, क्योंकि ऐसा करने से युवा मंच दर्शन का मूल तत्व ही नष्ट हो जायेगा। युवा मंच दर्शन जो मार्ग सुझाता है– वह है मध्य का मार्ग। न तो उसमें उग्रवाद की लपटें हैं, और न ही सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीनता। मंच दर्शन संयम सिखाता है। संयम का अर्थ है–संतुलन यानी अति से मुक्ति। सितार के तार न तो इतने कसे जाए कि संगीत भी पैदा न कर सकें। तारों की एक ऐसी भी दशा है जिसमें न तो तार बहुत कसे होते हैं और न ही बहुत ढीले। ऐसी दशा में ही मध्य मार्ग है एवं यह संतुलन ही संयम है। ऐसे संयम से ही संगीत पैदा होता है। उग्रवाद एवं उदासीनता के माध्यम का मार्ग बताता है, यह दर्शन। अमीरी व गरीबी की दूरियों को हटाकर बने मध्यम वर्ग के युवकों को चुनौती देता है, यह दर्शन। सजगता एवं सक्रियता का अमर संदेश देता है, युव मंच दर्शन।◆

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

SCARF worth Rs. 360/- **OR** Books with every 1 year subscription

TIE (720/-)+ Scarf (360/-) worth Rs. 1080/- **OR** Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City / District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : _____

E-mail : _____ Mobile _____ Landline . _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated _____ for Rs. _____ drawn on _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature : _____ date : _____

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : **Kolkata** : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 044-4217 1320, 98416 54257 • **New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : मनोज रानासरिया
कार्यालय का पता :
एक्सक्लुसिव जेम्स
४० बरतला स्ट्रीट
कोलकाता–७०००७
मोबाईल नं – ०९३३१०४५५५६

नाम : नेमचन्द करनानी
कार्यालय का पता :
एन.सी.करनानी एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउंटेन्ट
करनानी सर्किल, दी वाल रोड, जोरहाट
मोबाईल नं – ०९४३५०५०२४४

नाम : प्रमोद सराफ
कार्यालय का पता :
एमपीसी विनियोग प्राइवेट लिमिटेड
१, आर.एन. मुखर्जी रोड, मार्टिन बर्न हाउस
रूम नं० ४५सी, पांचवां तल्ला, कोल–१
मोबाईल नं – ०९३३१०१७३७३

नाम : प्रकाश कुमार पारख
कार्यालय का पता :
अमर भवन
पी–१० न्यू हावड़ा ब्रिज एप्रोच रोड
पांचवां तल्ला, कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं – ०९८३०९९६२४५

नाम : मणी लाल जालान
कार्यालय का पता :
जालान भवन
१० दिगम्बर जैन टेम्पल रोड
कोलकाता–७०००००७
मोबाईल नं – ०९४३३२२४५८८

नाम : पुष्कर लाल केडिया
कार्यालय का पता :
''मनीषिका''
४३ कैलास बोस स्ट्रीट
कोलकाता–७०००००६
मोबाईल नं – ०९८३१६१२७२३

सूचना

मार्च 2007 के पूर्व का बकाया जिन सदस्यों का चला आ रहा है उन सदस्यों के नाम मेलिंग सूची से हटा दिया जायेगा। अतः सभी सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराने की कृपा करें। ताकी समाज विकास आपको नियमित रूप से भेजा जा सके।

– राष्ट्रीय महामंत्री

परिचय :

लोक-इतिहास के प्रेरणा पुरुष : गोविंद अग्रवाल

– डॉ. दुलाराम सहारण

इतिहास एक ऐसा विषय है जो लोकयात्रा को सत्य–अक्षरों में लिखते हुए खुद को तारीखों में पिरोता चलता है। इस मार्ग के अनेक पड़ाव हैं। सम्पूर्ण पड़ावों से होते हुए जब मार्ग तय होता है तो एक सुनहरा अतीत बनता है। और तो और, इस मार्ग पर चलने वाले स्वयं एक इतिहास बन जाता है। परंतु, वह क्या बन सकता है जो इतिहास को संजोता है तथा कलम के चमत्कार से संपूर्ण विश्व के सामने उसे रखता है?

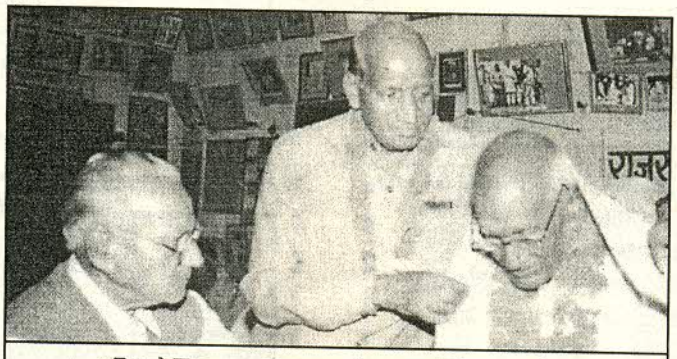

श्री गोविन्द अग्रवाल को सम्मानित करते हुए।

अग्रवालजी का इतिहास तथा साहित्य में जो योगदान है वह शब्दातीत है। गोविंदजी एक ऐसे तपस्वी हैं जो मां सरस्वती से मुंहमांगा वरदान लेकर धरती पर आए और अथक रूप से आजतक सरस्वती–भण्डार को भरने में लगे हैं।

इतिहासकारों के इतिहास की बात आती है तो राजस्थान के चूरू शहर के श्री गोविंद अग्रवाल का स्मरण हो आना स्वाभाविक है। श्री गोविंद अग्रवाल पहले ऐसे विद्वान हैं जो लोक–इतिहास के बूते पर अपनी सशक्त पहचान रखते हैं। नब्बे साल के लगभग की अपनी इस जीवनयात्रा में श्री गोविंद अग्रवाल ने अपनी ज्ञान भरी तीक्ष्ण दृष्टि का प्रसार इस भांति किया है कि हर एक पारखी भी उनसे रू–ब–रू होते हुए संकुचाता है।

लोक–इतिहास में 'चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास' एक ऐसा कीर्ति–स्तम्भ है जो अकेला श्री अग्रवाल को अमर रखेगा।

श्री गोविंद अग्रवाल का जन्म राजस्थान के चूरू शहर में भाद्रपद कृष्णा १, वृहस्पतिवार, विक्रम संवत् १९७९ तद्–अनुसार १७ अगस्त, १९२२ ई. को श्री दुर्गादत्त केजड़ीवाल के यहां हुआ। गोविंदजी का यह सौभाग्य रहा कि उनके पिताश्री दुर्गादत्तजी एवं बड़े भाई श्री सुबोधकुमारजी अग्रवाल साहित्यिक संस्कारों वाले थे। गोविंदजी को उनका सहयोग मिला।

१९४२ ई. का समय देश में राजनीतिक उठा–पटक का समय था। ठीक इसी वक्त में गोविंदजी की कलम ने आंदोलन छेड़ा और ललित गद्य–काव्य और अतुकांत कविताओं का सृजन रूपी परिणाम सामने आया। सन् १९४४–४५ में साप्ताहिक 'अर्जुन' में कई गद्य–काव्यमयी रचनाओं का प्रकाशन हुआ। पहली अतुकांत कविता 'हल' शीर्षक से सन् १९४७ में अलवर से प्रकाशित होने वाले मासिक 'राजस्थान क्षितिज' में छपी। सन् १९४७ में ही मासिक 'तरुण', इलाहाबाद में गोविंदजी का एक आलेख छपा।

सन् १९५७ के आसपास भोज प्रकाशन, धार (मध्य प्रदेश) से छपने वाली मासिक 'उषा' गोविंदजी की रचनाओं की चहेती पत्रिका बनी। इस पत्रिका में गोविंदजी ने चतुरसेन शास्त्री के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोली', 'सोना और खून' तथा 'वयं रक्षामः' की समीक्षा की। जो काफी लोकप्रिय हुई।

शोध दृष्टि के हुए विकास का सांगोपांग दर्शन सन् १९६० में **'बिड़ला एज्युकेशन ट्रस्ट'** के राजस्थानी विभाग की मुख पत्रिका **'मरु भारती'** में हुआ। सन् १९८५ तक गोविंदजी इस पत्रिका में निरंतर लिखते रहे। अगर इस पत्रिका में छपे उनके आलेखों को देखना हो तो कोई १५०० पृष्ठ खंगालने पड़ेंगे। इन १५०० पृष्ठों की सामग्री में गोविंदजी ने राजस्थानी लोककथाएं, लोकगीत, लोक इतिहास के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है।

राजस्थानी लोककथाओं का काम सन् १९६४ में भारती भण्डार, इलाहाबाद से पुस्तक रूप में दो भागों में

एक साहित्क गोष्ठी में भाग लेते हुए श्री गोविन्दजी अग्रवाल।

छपा। प्रथम भाग की भूमिका प्रसिद्ध विद्वान डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल तथा दूसरे भाग की भूमिका उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा ने लिखी। काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, मोरारजी देसाई, यूजीसी के अध्यक्ष डॉ. दौलतसिंह कोठारी आदि विद्वानों ने इसकी जमकर तारीफ की।

गोविंद अग्रवाल राजस्थानी कहावतों पर श्री भागीरथ कानोड़िया के साथ मिलकर सन् १९७९ में पुस्तक रूप में भी आए। इसमें ३२०९ कहावतें भावार्थ के साथ तथा ३५० कहावतें संदर्भ कथा के साथ दी गईं। लोक मर्मज्ञ डॉ. सत्येंद्र ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी। इस पुस्तक के संदर्भ में डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने लिखा– ''राजस्थानी कहावत कोश के संपादक ने स्मृतिकार की भूमिका निभाई है। ये लोकोक्तियां मील का पत्थर हैं और यह कोश एक संदर्भ ग्रंथ है।''

गोविंदजी की रुचि लोक तथा लोक–इतिहास में रही। इसको परवान चढ़ाने हेतु चूरू में अपने तीन साथियों– श्री सुबोधकुमार अग्रवाल, कुंजबिहारी शर्मा तथा श्रीनिवास दिनोदिया के सहयोग से 'लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगरश्री' की सन् १९६४ में स्थापना की। आगे चलकर इसका खुद का भवन भी स्थापित हुआ।

नगरश्री से 'मरुश्री' नाम से शोध पत्रिका सन् १९७१ में प्रारम्भ हुई। चूरू अंचल एवं दूसरी जगहों से शोध संग्रहालय में पुरानी मूर्तियां, पुरातात्विक सामग्री, हस्तलिखित पाण्डुलिपियां, ताड़पत्री प्रतियां, पुराने अभिलेख तथा बहियां आदि इक्कट्ठी की गईं। इस संग्रहालय में भाड़ंग, कालीबंगा, रंगमहल, करोती, सोथी तथा पल्लू के थेहड़ों से संग्रहित पुरातात्विक सामग्री मौजूद है, जो काफी महत्वपूर्ण मानी जाती है। नगरश्री ने स्वयं के पुस्तकालय की स्थापना की। नगरश्री सभागार में नगर के महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों आदि के १२०० से ज्यादा चित्रों की शृंखला संयोजित की गई। प्रकाशन विभाग से पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। ऐतिहासिक– साहित्यिक– सांस्कृतिक आयोजनों का सिलसिला शुरू हुआ। विद्वानों का सम्मान एक परम्परा के तहत किया जाने लगा।

सन् १९६६ में श्री गोविंद अग्रवाल की पुस्तक 'जैन धर्म को चूरू जिले की देन' छपी। इस पुस्तक के माध्यम से इस क्षेत्र का एक हजार वर्षों का जैन–इतिहास पहली दफा सामने आया।

चूरू नगर के मंदिर–देवलों के भित्तिचित्र, शिलालेख तथा उनसे जुड़े हुए विभिन्न तथ्यों के संगम से पुस्तक 'चूरू के मुख्य मंदिर' प्रकाश में आई। दूसरी पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक परम्पराएं' नाम से संपादित की गई। 'चूरू चंद्रिका' नाम से छपे संग्रह में चूरू के सम्पूर्ण पक्षों को सहेजा गया।

चूरू के लोकप्रिय समाजसेवी स्वामी गोपालदास के संघर्ष को 'स्वामी गोपालदासजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया। यह पुस्तक सन् १९६८ में छपी।

'मरुश्री' पत्रिका नगरश्री की मुख्य पत्रिका थी। इसमें सन् १९७४ से १९७७ तक गोविंद अग्रवाल का राजस्थानी गद्यकाव्य 'नुक्तीदाणा' छपा। सन् १९७८ में ये १०१ नुक्ती दाणा पुस्तक रूप में आए। पुस्तक की यह खास बात थी कि राजस्थानी, हिंदी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में ये नुक्तीदाणा दिए गए।

'मरुश्री' पत्रिका सन् १९७१ में प्रारम्भ हुई थी। इसमें 'ग्राम दर्शन', 'खोज की पगडंडियां', 'बस्तों–बुगचों से' जैसे स्थायी स्तम्भ थे। इस पत्रिका के माध्यम से लोक–इतिहास पर अनोखा काम हुआ।

गोविंदजी की अगुवाई में सन् १९६४ में एक योजना बनी थी कि चूरू मण्डल का प्रामाणिक इतिहास लिखा

राजस्थानी साहित्य प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

जाए। चूरू के इतिहास पर यह एक भांति पहला ही काम था, इस कारण काफी मेहनत एवं परिश्रम वाला था। परंतु, जब ५४२ पृष्ठ, २१ अध्याय, ४४ परिशिष्ट और १०१ चित्र, मानचित्र, अभिलेख, शिलालेख, ताम्रपत्र और हस्तलिखित ग्रंथों के चित्राम लेकर यह ग्रंथ सार्वजनिक हुआ तो सभी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। इस ग्रंथ का नाम 'चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास' रखा गया। चूरू अंचल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को इसमें भली–भांति समायोजित किया गया। ग्रंथ की भूमिका प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रघुवीरसिंह सीतामऊ ने लिखी। ग्रंथ का २५ अप्रैल, १९७४ को चूरू शहर में बड़ा समारोह आयोजित कर विमोचन किया गया। इस समारोह में देश के नामी इतिहासकारों ने शिरकत की।

यह ग्रंथ आज आंचलिक इतिहास के मार्ग पर मील का पत्थर माना जाता है। मुड़िया लिपि के गोविंदजी ख्यातनाम जानकार हैं। इस लिपि को पढ़ने के लिए आज काफी यत्न किए जाते हैं। गोविंदजी मुड़िया लिपि को पढ़ने वाले ही नहीं अपितु गहरे जानकार भी हैं। इस लिपि में लिखी व्यापारिक घरानों की बहियों को ढूंढ़कर संग्रहित करते हुए उन पर महत्त्वपूर्ण काम किया। चूरू के पोतदार संग्रह में संग्रहित २०० वर्ष पुराने अभिलेख और १५–२० कीलो की बहियों को गोविंदजी ने खंगाला तथा उनके ऐतिहासिक महत्त्व को प्रगट किया। यह काम सन् १९७६ में 'पोतदार संग्रह के अप्रकाशित कागजात' के नाम से पुस्तक रूप में आया।

व्यापारिक घरानों में मुनीम–गुमाश्तों का जबरदस्त योगदान होता है। परंतु, किसी ने इस पर काम नहीं किया। गोविंद अग्रवाल ने इसको चुनौती माना और सन् १९८३ में 'वाणिज्य व्यापार में मुनीम–गुमाश्तों की भूमिका' पुस्तक छपकर पहचान बनाने में कामयाब रही।

चूरू के पोतदार (पोद्दार) संग्रह में महाराजा रणजीतसिंह और नाभा, पटियाला, जिंद, कपूरथला आदि के शासकों के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के पदाधिकारियों आदि के फारसी परवाने थे। गोविंद अग्रवाल ने इनकी खोज की और डॉ. रघुवीरसिंह सीतामऊ ने २५० अभिलेखों का फारसी अनुवादक मुंशी काजी करामतुल्लाह से अनुवाद करवाया। यह काम 'पोतदार संग्रह के फारसी कागजात' नाम से पुस्तक रूप में आया।

'उन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध में समृद्ध भारतीय बीमा पद्धति' पुस्तक श्री गोविंद अग्रवाल १९८७ ई. में प्रकाशित करवाते हैं, जो कि बीमा इतिहास प्रकट करती है। यह पुस्तक राजस्थान के शिक्षा पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित रही।

गोविंदजी विद्वता के बलबूते पर इतिहास अनुसंधान परिषद, दिल्ली की ओर से २ वर्ष हेतु सीनियर फैलोशिप प्राप्त करने में सफल भी हुए। दूसरी अनेक संस्थाओं ने भी उनका काफी मान–सम्मान किया। परंतु खास बात यह रही कि गोविंदजी पुरस्कार लेने से शर्माते रहे। उनमें यह

गोविन्द अग्रवाल के साथ दशरथ शर्मा

प्रवृत्ति अब भी जिंदा है। वे फोटो खिंचवाते हैं तो आज भी लजा या शर्मा जाते हैं।

अग्रवालजी की दृष्टि तीक्ष्ण है। उनकी आदत है कि वे किसी पुस्तक का अध्ययन करते हैं तो लाल पेंसिल हाथ में रखते हैं। जहां–जहा वे गलती देखते हैं वहां–वहां लाल घेरा कर देते हैं। तथ्य की परख और भाषा का ज्ञान उनका गजब है। उन्होंने राजस्थान शिक्षा विभाग की पाठ्य–पुस्तकों में अनेक बार संशोधन करवाए। राजस्थान गजेटियर विभाग की तरफ से निकाले गए चूरू गजेटियर में संशोधन करवाया। जनसंपर्क विभाग, चूरू की तरफ से निकाली गई 'चूरू दर्शन' पुस्तक पर तो गोविंदजी की निकाली गई गलतियों के कारण रोक भी लगा दी गई।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'गोली' में गोविंदजी ने अनेक गलतियां निकालीं। जो अगले संस्करण में सुधारी गईं। उपेन्द्रनाथ अश्क के 'गिरती दीवारें' उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९५१ में प्रकाशित हुआ। गोविंदजी ने इसको लाल घेरों से सज्जित करके अश्कजी के पास भिजवाया। तीसरा संस्करण जब १९५७ में छपा तो अश्कजी ने दो शब्द लिखते हुए उपन्यास में सुधार

हेतु जिनका आभार प्रकट किया उनमें गोविंद अग्रवाल, चूरू एवं प्रो. बोस्क्रेनी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेनिग्राड विश्वविद्यालय के नाम थे।

श्री गोविंद अग्रवाल आज अपने लड़कों के पास कर्नाटक के कुमारपट्टनम् नगर में रहते हैं। परंतु, उनके पास जो पुस्तक, पत्रादि पहुँचते हैं उन पर सटीक टिप्पणी और पुस्तक लाल घेरों के साथ वापिस जरूर आती है।

अग्रवालजी का इतिहास तथा साहित्य में जो योगदान है वह शब्दातीत है। गोविंदजी एक ऐसे तपस्वी हैं जो मां सरस्वती से मुंहमांगा वरदान लेकर धरती पर आए और अथक रूप से आजतक सरस्वती–भण्डार को भरने में लगे हैं।

यहां यह बात लिखनी भी जरूरी हो जाती है कि श्री गोविंद अग्रवाल के बड़े भाई श्री सुबोधकुमार अग्रवाल आयोजनधर्मी एवं यात्राशील मनुष्य थे। उनकी यात्राएं एवं

गोविन्द अग्रवाल के साथ सुबोध अग्रवाल

आयोजन नगरश्री संस्थान तथा नगरश्री संग्रहालय को गति देते। इससे गोविंदजी को सहायक सामग्री तथा बल मिलता।

लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगरश्री की यात्रा निरंतर जारी है। श्री रामगोपाल बहड़, डॉ. शेरसिंह बीदावत, श्री श्यामसुंदर शर्मा, श्री रामचंद्र शर्मा आदि विद्वान अग्रवाल बंधुओं की धरोहर को अच्छे ढंग से संभाले हुए हैं एवं नित्यप्रति उसमें वृद्धि कर रहे हैं। मूल रूप से यह आलेख उन्हीं की देन हैं।

उम्मीद की जा सकती है कि गोविंदजी के काम को इसी भांति गति मिलती रहेगी। गोविंदजी का लेखन अमर रहेगा तथा उनकी साधना को नमन् करते हुए विद्वान वर्ग आगे बढ़ता रहेगा।◆

– 105, गांधीनगर, चूरू–331001 राजस्थान
E-mail : drsaharan09@gmail.com

प्रेमलता खड़ेलवाल की तीन कविताएँ

अंत-जीवन का

पाँच तत्व ने मिलकर
किया देह निर्माण
आत्मा की उपस्थिति में–
किया संसार व्यवहार– ।।१।।

किया संसार व्यवहार–
निज आत्मा को भूला–
किया देह से प्यार–
चौरासी में झूला ।।२।।

चार एपीसॉड में–
हुआ जीवन का अंत
सीधे हाथ पसार दिया
माटी में तृणवत् ।।३।।

जीवन बीता प्रियजनों में–
प्यार किया हर पल
इक पल भी ज्यादा नहीं रखते
जब हो जाता अंत– ।।४।।

स्वार्थ के सब रिश्ते–नाते–
कोई न जाता संग–
सत् कर्मो की बाँध पोटली
(प्राणी) ले जा अपने संग ।।५।।

संत–समागम हरि–कथा कर
सेवा कर हरदम
श्वांस–श्वांस में हरिनाम सुमिर ले–
अंत जाएगा संग– ।।६।।

तन से सेवा कर,
धन से कर दान,
मन से प्रभु का सुमिरन कर
हो जा भव से पार– ।।७।।

दर्पण

दर्पण में अपनेआप को देखो
क्या देख पाते हो?
कभी स्थिर होकर झांका अपनी आँखों में?
क्या कहती हैं आँखें
पूछती हैं मुझसे – कौन हो तुम?
मैं सोचती हूँ क्या जवाब दूँ?
कहती हूँ – ''मैं आत्मा हूँ।''
दर्पण कहता है – फिर परमात्मा की प्राप्ति क्यों नहीं?
जवाब देने से पहले टटोलती हूँ अपने आपको
अरे – मोह माया के दलदल में फंसी हूँ मैं –
बाहरी आकर्षणों में लिप्त हूँ मैं–
आत्म – तत्व से बहुत दूर हूँ मैं–
नजर नहीं मिला पाती अपनी ही आँखों से–
डरती हूँ अपने आप से जब समझती हूँ अपने आपको–
दर्पण से नजर मिला पाऊँगी तब–
जब दृष्टा बनकर अपने आप को देख पाऊँगी–
अंदर–बाहर एक हो पाऊँगी–
तब निहारुँगी अपने आप को–
प्रसन्न होकर अपने से नजर मिलाऊँगी– दर्पण में

अर्थ का अर्थ

अर्थ से अनर्थ है
अर्थ बिन अनर्थ है
अर्थ–प्रधान युग में–
अर्थ का ही अर्थ है ।।१।।

अर्थ की अदालत
अर्थ की हुकूमत
अर्थ की इज्जत
अर्थ का ही अर्थ ।।२।।

रिश्तों का अर्थ, अर्थ से
बाप–बेटा– अर्थ से
पति–पत्नी–अर्थ से
जीवन का मूल्य अर्थ से ।।३।।

जीवन रसमय अर्थ से–
गुणी–गुणवान अर्थ से–
मानव–मानव है अर्थ से–
अर्थ बिन सब अनर्थ है ।।४।।

बाल्यकाल–अर्थ से–
जवानी–जवानी अर्थ से
गृहस्थाश्रम–अर्थ से–
मरणोपरांत–संस्कार अर्थ से ।।५।।

अर्थ बिन परोपकार नहीं–
अर्थ बिन वैभव नहीं–
अर्थ बिन यज्ञ नहीं–
अर्थ–बिन पहचान नहीं ।।६।।

संपर्क : अर्चना प्रकाशन, जी. एस. रोड दिसपुर, गुवाहाटी-781005

कविता :

पथिक

जयकुमार रुसवा

बैठो पथिक जरा सुस्तालो
लथपथ देह पसीने से है
छांह में आओ तनिक हवा लो
बैठो पथिक.....
गाँव गली और खेत–गुवाड़ी
पथ–पगडण्डी तिरछी–आड़ी
बाधाओं से अनगिन टीले
विविध रकम कंटक नूकीले
श्वेत मिट्टी की सड़क सजीली
ऊबड़ खाबड़ और पथरीली
नाप इन्हें तुम आये बढ़ते
धनी बड़े प्रण के दिख पड़ते
लेकिन क्या रस्ते में गुजरी
हाल जरा कहलो–बतियालो
बैठो पथिक.....
अभी बहुत लम्बा पथ बाकी
तपती बालू रेत बला की
झुलस रहीं हैं दसों दिशाएं
नहीं उचित कि देह जलाएं
अभी नहीं स्वीकारेगा मन
परिभाषा चलना ही जीवन
यह मरुथल है मेरे साथी
तन जलता है प्यास सताती
खुश्क गले में अमृत जैसा
मटकी का ठण्डाजल ढालो
बैठो पथिक.....
वहीं मिलेगा ठौर–ठिकाना
तुमको जहां तलक है जाना
लेकिन क्या जल्दी है भाई
धूप ले रही है अंगड़ाई
लूओं के ये तेज बवण्डर
बहते सांय–सांय का ले स्वर
अपनी कोमल देह टटोलो
रौद्र रुप दिनकर का तोलो
मूल्यवान सीकर के मुक्ता
धूल न हो तुम इन्हें संभालो
बैठो पथिक.....
मैं भी इसी राह का राही
बिल्कुल साथी हूं तुमसा ही
जो ज्ञानीजन हमें सिखाते
उस पर नहीं चित्त क्यूं लाते
पथ में कोई साथ मिले तो
बातों का कुछ दौर चले तो
हो जाता आसान सफर कुछ
लगती छोटी राह डगर कुछ
कुछ पल पीपल छांव बैठलो
साथ चलूंगा बात न टालो
बैठो पथिक.....

– 66, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोल–6
कानाबाती : 09433272705

ज़िन्दगी की धूप–छाँव

– श्रीमती सुमन बैगानी

हमने भी जमाने में कई रंग देखे हैं।
कभी धूप, कभी छाँव तो कभी बारिशों के संग देखे हैं।।
कभी वसंत, कभी पतझड़, कभी शीत तो कभी गरम मौसम के संग देखे हैं।
जैसे–जैसे मौसम बदला लोगों के बदलते रंग भी देखे हैं।।
ये उन दिनों की बात है, जब हम बहुत भावुक और मायूस हो जाया करते थे।
और अपनी मासूमियत का गीत लोगों को सुनाया करते थे।
और कभी–कभी भावना और जज़्बात में आकर आँसू भी बहाया करते थे।
और लोग हमारे आँसुओं को देखकर अक्सर हँसी उड़ाया करते थे।
और हम अपने जज़्बात पर इस तरह कहर होते देख भी मौन रह जाया करते थे।।
अचानक ज़िंदगी ने एक नया मोड़ लिया।
और हमने अपनी परेशानियों से घबराना ही छोड़ दिया।
और जीवन जीने का सही रास्ता खोज लिया।
अब हम दूसरों की जिंदगी में भी उम्मीदों के बीज बोते हैं।
और हमेशा वे खुश रहे बस यही दुआ देते हैं।।
दोस्तों यही है, जीवन और जीने का रंग।
समझते हुए जीओ तो दोस्तों जीवन है खुशी है।
और मर–मर कर जीओ तो बस दुख ही दुख है।।

– एच.ए.–60, साल्टलेक, कोलकाता

श्रद्धांजलि :

अहिंसा के पुजारी आचार्य महाप्रज्ञ जी

जयपुर:सीकर। जैन समाज के ख्यात संत आचार्य महाप्रज्ञ का रविवार को राजस्थान के चुरु शहर के सरदार शहर में रविवार ९ मई को दोपहर २.५२ बजे निधन हो गया। वे इनदिनों में चातुर्मास पर थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने दोपहर दो बजे तक श्रद्धालुओं को दर्शन दिया। उसके बाद अचानक उनकी तबियत बिगड़ गई। डॉक्टरों को बुलाया गया, लेकिन उन्होंने शरीर त्याग दिया। उनके निधन की खबर से देश–विदेश में शोक की लहर दौड़ गई है।

जन्म : आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म विक्रम संवत् १९७७ (१९२०) में आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी को राजस्थान के झुंझुनू के टमकोर के चोरड़िया परिवार में हुआ था। पिता का नाम तोलारामजी एवं माता का नाम बालूजी था। आपका जन्म नाम नथमल था। बचपन में ही पिताश्री का देहांत हो जाने के कारण माताजी ने ही पालन–पोषण किया। माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं इसी कारण उनमें धार्मिक चेतना का उदय हुआ।

दीक्षा : आपने २९ जनवरी १९२९ अर्थात् विक्रम संवत् १९८७ के माघ शुक्ल की दशमी को सरदार शहर में नथमल ने अपनी माता के साथ संत श्रीमद कालूगणी से दस वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात्य उनकी पहचान धीरे–धीरे मुनि नथमल के रूप में होने लगी।

आचार्य तुलसी : आपने श्रीमद कालूगणी की आज्ञा के चलते मुनि आचार्य तुलसी को गुरु बनाया और उन्हीं के सानिध्य में रहकर विद्या अध्ययन किया। दर्शन, न्याय, व्याकरण, कोष, मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिस पर प्रज्ञासागरजी की पकड़ न हो।

गहन अध्ययन : जैनागमों के अध्ययन के साथ आपने भारतीय एवं भारतीयेत्तर सभी दर्शनों का अध्ययन किया है। संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार है। वे संस्कृत भाषा के सफल आशु कवि भी हैं। आपने संस्कृत भाषा के सर्वाधिक कठिन छंद 'स्त्रग्धरा' में 'घटिका यंत्र' विषय पर आशु कविता के रूप में श्लोक बनाकर प्रस्तुत किए।

संस्कृत भाषा में संबोधि, अश्रुवीणा, मुकुलम, अतुला–तुला आदि तथा हिन्दी भाषा में **'ऋषभायण'** कविता को आपके प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं। आपने जैन आगम, बौद्ध ग्रंथों, वैदिक ग्रंथों तथा प्राचीन शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है। जैनों के संबसे प्राचीन एवं अबोधगम्य श्आचारांग सूत्रश् पर संस्कृत भाषा में भाष्य लिखकर आचार्य महाप्रज्ञ ने प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित किया है। आपके विभिन्न विषयों पर लगभग १५० ग्रंथ है।

महाप्रज्ञ की उपाधि : आचार्यश्री तुलसी ने महाप्रज्ञ जी को ११४४ में अग्रगण्य एवं ईस्वी सन् १९६५ विक्रम संवत २०२२ माद्य शुक्ला सप्तमी को हिंसार (हरियाणा) में निकाय सचिव नियुक्त किया। उनकी अंत: प्रज्ञा व गहन ज्ञान से प्रभावित होकर गंगाशहर में आचार्यश्री तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ की उपाधि से अंलकृत किया।

आचार्य पद : विक्रम संवत् २०३५ राजलदेसर (राजस्थान) मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री तुलसी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में उनकी घोषणा की। विक्रम संवत् २०५० सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव के ऐतिहासिक समारोह के मध्य आचार्यश्री तुलसी ने अपनी उपस्थिति में अपने आचार्य पद का विर्सजन कर युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

अन्य उपलब्धियाँ : २३ अक्टूबर १९९९ को नीदरलैड इंटर कल्चरल ओपन युनिवर्सिटी ने साहित्य के लिए डी.लिट् उपाधि से सम्मानित किया। मानवता के क्षेत्र में महाप्रज्ञ की अनगिनत एवं उल्लेखनीय सेवाओं एवं योगदानों के संदर्भ में उन्हें युगप्रधान पद से सम्मानित किया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन आपके दुखद निधन पर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।◆

श्रद्धांजलि :

श्री शेखावत भारतीय राजनीति में एक नई मिसाल

जन्म :
23 अक्टूबर, 1923

मृत्यु :
15 मई, 2010

> श्री शेखावत ग्रामीण भारत से जुड़े कर्मठ और समर्पित व्यक्ति थे। श्री शेखावत का व्यक्तित्व विराट था और उनके निधन से देश के सार्वजनिक जीवन का नुकसान हुआ है। श्री शेखावत एक ऐसे राजनेता थे जिन्होंने भारतीय राजनीति में मर्यादा. सौहार्द्रता एवं समन्वय की नई मिसाल कायम की। श्री शेखावत ने राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुये उन लोगों की चिंता की जो समाज में सबसे पीछे और सबसे नीचे हैं। श्री शेखावत ने अंत्योदय कार्यक्रम लागू किया और जीवन भर अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। उप राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने देश की महत्वपूर्ण सेवा की जो स्मरणीय रहेगी।

जयपुर 15 मई 2010 : देश के पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत का शनिवार को जयपुर के सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में निधन हो गया। शेखावत को पिछले 13 मई की रात सीने में दर्द के बाद सवाई मानसिंह अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू)में भर्ती कराया गया था। भैरों सिंह शेखावत बीजेपी के कद्दावर नेता माने जाते थे। वह 19 अगस्त 2002 से 21 जुलाई 2007 तक देश के उपराष्ट्रपति रहे। वह देश के 11वें उपराष्ट्रपति थे। वह तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रह चुके थे।

भैरोसिंह शेखावत का जन्म 23 अक्टूबर 1923 को राजस्थान के सीकर जिले के एक छोटे से गांव खाचरियावास में हुआ था। आप तीन बार सन् 1980, 1992 और 1998 राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रहे। आपने थानेदार की नौकरी छोड़ने के बाद 1948 में जनसंघ की सदस्यता ली। शेखावत ने 1952 में विधानसभा का पहला चुनाव लड़ा था।

श्री शेखावत ग्रामीण भारत से जुड़े कर्मठ और समर्पित व्यक्ति थे। श्री शेखावत का व्यक्तित्व विराट था और उनके निधन से देश के सार्वजनिक जीवन का नुकसान हुआ है। श्री शेखावत एक ऐसे राजनेता थे जिन्होंने भारतीय राजनीति में मर्यादा. सौहार्द्रता एवं समन्वय की नई मिसाल कायम की। श्री शेखावत ने राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुये उन लोगों की चिंता की जो समाज में सबसे पीछे और सबसे नीचे हैं। श्री शेखावत ने अंत्योदय कार्यक्रम लागू किया और जीवन भर अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। उप राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने देश की महत्वपूर्ण सेवा की जो स्मरणीय रहेगी। उनके निधन से भारतीय राजनीति ने एक योग्य मिलनसार और कुशल राजनेता को खो दिया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन आपके दुखद निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।◆

श्रद्धांजलि :

कोलकाता में हिन्दी नाट्य जगत स्तब्ध

श्यामानन्द जालान नहीं रहे।

मुजफ्फरपुर में जन्मे श्री श्यामानन्द जालान का 24 मई की रात कोलकाता के एक निजी अस्पताल में देहान्त हो गया। आप पिछले चार–पाँच साल से अस्वस्थ चल रहे थे। आपका योगदान न सिर्फ बांग्ला फिल्म उद्योग में रहा, हिन्दी–बंगाल नाट्य जगत में आपके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। पेशे से अधिवक्ता श्री जालान के जाने से बंगाल का शिल्पी जगत स्तब्ध हो गया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से आपका स्नेह सदैव बना रहता था। आपको हमारी तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रस्तुत है आपके जीवन की छोटी झलक – संपादक

13 जनवरी 1934 को जन्मे श्री जालान का लालन पालन एवं शिक्षा–दीक्षा मुख्यतः कलकत्ता एवं मुजफ्फरपुर में ही हुई हैं। बचपन से राजनैतिक वातावरण में पले श्री जालान के पिता स्वर्गीय श्री ईश्वरदास जी जालान पश्चिम बंगाल विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। वकालत का पेशा निभाते हुए रंगमंच के प्रति अपने दायित्व और प्रतिबद्धता को पूरी निष्ठा से निभाने वाले इस रंगकर्मी को 'नए हाथ' नाटक के लिए 1957 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए एवं 1973 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत कर सम्मानित किया जा चुका है।

श्री जालान को भारतीय रंगमंच का एक महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते रहे हैं। बचपन से नाटक से जुड़े श्री जालान एक प्रगतिशील रंगकर्मी, सशक्त अभिनेता एवं सफल निर्देशक थे। इनकी शुरुआत हिन्दी नाटकों से हुई मगर बाद में बंगला में 'तुगलक' के निर्देशन एवं अँग्रेजी में 'आधे–अधूरे' के अभिनय के लिए भरपूर सराहना प्राप्त की।

बंगला फिल्म 'चोख' के लिए विशिष्ट सहायक अभिनेता का पुरस्कार बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एशोसियेशन द्वारा दिया गया। 'तरुण संघ' 'अनामिका' एवं 'पादातिक' जैसी नाट्य संस्थाओं के संस्थापक निर्देशक श्री जालान भारतीय सांस्कृतिक संघ परिषद–भारत महोत्सव और भारतीय नाटक संघ में कई देशों की यात्रा कर चुके स्व.जालान मास्को, बर्लिन, फ्रेंकफर्ट, हवाना और कनाडा में आयोजित कई नाट्य–गोष्ठियों में भारतीय रंगमंच का प्रतिनिधित्व भी कर चुके हैं। आपने टी. वी. सीरियल 'कृष्णकांत का वसीयतनामा' का निर्देशन किया एवं टी. बी. फिल्म 'सखाराम बाइंडर' का निर्देशन भी आपने ही किया।

सर्वप्रथम आपने हरि कृष्ण प्रेमी द्वारा लिखित 'मेवाड़ पतन' नामक नाटक में एक चपला युवती का अभिनय किया था। जिसके निर्देशक थे ललित कुमार सिंह नटवरे, उसके बाद स्काटिश चर्च कॉलेज में ललित कुमार जी के ही निर्देशन में उपेन्द्रनाथ का 'अधिकार के रक्षक' नाटक में अभिनय किया । 1949 से तरुण संघ के अंतर्गत नाटक करने लगे।

आपने तरुण राय से आधुनिक नाट्य विद्या और पश्चिमी नाट्य शैली का परिचय प्राप्त किया। उनके लिखे एक बाल नाटक 'रूप कथा' का 'एक थी राजकुमारी' के नाम से हिन्दी में अनुवाद और निर्देशन किया, इन्होंने ही बतौर निर्देशक यह इनका पहला नाटक था।

सन् 1955 में भँवरमल जी, सुशीला जी, प्रतिभा जी के साथ मिलकर 'अनामिका' की स्थापना की।

सन् 1971 तक का काल जब श्यामानन्द जी 'अनामिका' से अलग हुए, 'अनामिका' और श्यामानन्द

दोनों के जीवनकाल में इस काल के पूर्व तक कई महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ सामने आई। जिन्होंने 'अनामिका' और श्यामानन्द जालान को गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित किया। उनमें विशेष उल्लेखनीय है। 'छपते–छपते', 'लहरों के राजहंस', 'शुतुरमुर्ग' तथा 'इन्द्रजीत' इन चारों के निर्देशक श्यामानन्द जालान थे। श्यामानन्दजी की एक और प्रस्तुति 'विजय तेन्दुलकर' के इस नाटक को उन्होंने सर्वथा भिन्न शैली में प्रस्तुत किया।

'अनामिका' में श्यामानन्द की यह अंतिम प्रस्तुति थी। इसके बाद कुछ व्यक्तिगत कारणों से आप 'अनामिका' से अलग हो गए। सन् 1972 में उन्होंने 'पदातिक' नाम से एक अलग संस्था को जन्म दिया। जिसके तत्वावधान में शुरूआती वर्ष में 'गिधाड़े', 'सखाराम बाईपुर', 'हजार चौरासी की माँ तथा शकुंतला' नाटकों का संचय किया गया। 'पदातिक' बन जाने के बाद कलकत्ते के हिन्दी रंगमंच में नए दौर की शुरुआत हुई। आज कोलकाता जैसे शहर में 'पदातिक' एक शिक्षण संस्थान के रूप में काफी चर्चित हो गई है। जिसका एक मात्र श्रेय श्री श्यामानन्द जी जालान को।

श्यामानन्द जालान की प्रस्तुति

1949 नया समाज, 1950 विवाह का दिन, 1951 समस्या, 1952 अलग अलग रास्ता, 1953 एक थी राजकुमारी, 1954 कोणार्क, 1955 चंद्रगुप्त, 1956 हम हिन्दुस्तानी है, 1956 संगमरमर पर एक रात, 1956 सत्य किरण, 1957 नदी प्यासी थी, 1957 पाटलीपुत्र के खंडहर में, 1957 नये हाथ, 1958 अंजो दीदी, 1958 नवज्योती के नयी हिरोइन, 1958 नीली झील, 1959 जनता का शत्रु, 1959 कामायनी (डांस ड्रामा), 1960 आषाढ़ का एक दिन, 1961 घर और बाहर, 1963 शेष रक्षा, 1963 छपते छपते, 1964 मादा कैक्टस, 1966 लहरों के राजहंस, 1967 शुतुरमुर्ग, 1968 मन माने की बात, 1968 एवम् इंद्रजीत, 1970 आधे अधूरे, 1971 पगला घोड़ा, 1972 पंछी ऐसे आते हैं, 1972 तुगलक (बांग्ला),1973 सखाराम बाइंडर, 1977 गुड वुमन ऑफ सेटजुआन, 1978 हजार चौरासी की माँ, 1980 कौवा चला हंस की चाल, 1980 शकुंतलम्, 1981 पंक्षी ऐसे आते हैं, 1982 उद्वास्त धर्मशाला, 1982 बीबियों का मदरसा, 1983 आधे अधूरे, 1985 मुखिया मनोहरलाल, 1987 कन्यादान, 1987 क्षुदितो पाषाण, 1988 राजा लियर, 1989 बीबियों का मदरसा, 1991 सखाराम बाइंडर, 1992 आधार यात्रा, 1995 रामकथा रामकहानी, 1998 कौवा चला हंस की चाल, 2000 खामोश अदालत जारी है, 2006 माधवी, 2008 लहरों के राजहंस।◆

कूड़ा

– नरेन्द्र जैन

कूड़ा सभी फैला रहे हैं
कूड़ा फैल ही रहा
ख़ाली जगहों पर, ख्यालों में
और ज़ेहन में फैलता ही जा रहा यह
ग़र यही रफ़्तार रही
तो ज़्यादा देर नहीं लगेगी
दुनिया को कूड़े में बदलने से
ऐसा नहीं कि कोई मजबूरी हो
लोग–बाग शौकिया फैला रहे कूड़ा

कोई अखबार में
कोई किताब में
कोई प्रगतिशीलता में
कोई शिलालेख में
फैला ही रहा है कूड़ा
कूड़े की किस्में भी बेशुमार हैं
धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक
तकनीकी, मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक
और
राजनैतिक कूड़े का जिक्र ही क्या किया जाये

ग़रज ये कि
गुज़र बसर करते हम यार
कूड़े के इर्द गिर्द
अब किससे कहें
कि ''हटाओ बहुत हो चुका
कूड़ों ने जहन्नुम बना कर रख दी है
ये जिंदगी।''

– 132, श्रीकृष्ण कॉलोनी
विदिशा 464001 (म.प्र.)
मो.–09425079116

बधाई

वर्ष 2009 की भारतीय प्रशासनीक सेवा हेतु चयन किए गए मारवाड़ी छात्र-छात्राओं को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से बधाई!

PRAKASH RAJPUROHIT
GARIMA MITTAL
TARUN RATHI
ABHIJEET AGRAWAL
JITENDR KUMAR SONI
KARTIKEYA GOEL
SHASHANK SETHI
SAKSHI MITTAL
NEHA BANSAL
NEHA SHARMA
GAURAV DAHIYA
VIKAS SHARMA
VIKRAM PAGARIA
AMIT SHARMA
ANKIT GOYAL
NIMISH AGARWAL
SHYAM LAL POONIA
VISHWA MOHAN SHARMA
MANISH AGRAWAL
PRAVEEN KUMAR MITTAL
GAURAV BANSAL
MEETU AGARWAL
NIDHI MITTAL
MALVIKA GARG
KANIKA AGARWAL
SURAJ BHAN GARHWAL
SWATI AGARWAL
ANU AGARWAL
PAWAN KUMAR KHETAN
SUMIT GARG
KUSHAGRA MITTAL
RITU SHARMA
VIKRAM JINDAL
ADITI GUPTA
ROHIT GUPTA
GHANSHYAM BANSAL
GHANSHYAM SONI
JITENDRA KUMAR AGRAWAL
PAARUL BANSAL
AMEESH AGARWAL
MAHENDAR BAGARIA
PRASHANT SINGHANIA
SANDEEP KUMAR SONI
RATHI PRIYA R
UMA MAHESWARI
AUNISH BANSAL

थोड़ा हँस लें :

एक दिन बादशाह अकबर ने कागज पर पैन्सिल से एक लम्बी लकीर खींची और बीरबल को बुला कर कहा– बीरबल न तो यह लकीर घटाई जाए और न ही मिटाई जाए लेकिन छोटी हो जाए? बीरबल ने फौरन उस लकीर के नीचे एक दूसरी लकीर पैंसिल से बड़ी खींच दी। यह देखिए जहांपना ! बीरबल बोले– अब आप की लकीर इस से छोटी हो गयी। बादशाह यह देखकर खुश हुए और मन ही मन उन की अक्ल की दाद देने लगे।

◆◆◆

एक दिन बादशाह ने दरबारियों से पूछा कि हर समय कौन चलता है? उत्तर में किसी ने पृथ्वी, किसी ने चन्द्रमा को बताया तथा किसी ने हवा आदि को बताया। बादशाह ने यह प्रश्न बीरबल से पूछा तो उन्होने उत्तर दिया कि अली जहां! महाजन का ब्याज हर समय चलता रहता है इसे कभी थकावट नहीं होती। दिन दुगनी और रात चौगुनी वेग से चलता है। बादशाह को यह उत्तर पसंद आया।

◆◆◆

बादशाह अकबर को ठट्ठेबाजी का बहुत शौक था और देव योग से बीरबल भी बडा ठट्ठेबाज था।

एक बार बादशाह ने हँसी मे बीरबल के जूते उठवा लिए। चलते–चलते बीरबल जूते ढूंढने लगे। जब जूते न मिले तो अकबर ने सेवक से कहा – अच्छा, हमारी ओर से इन को जूते दे दो।

यह सुन सेवक ने जूते पहना दिया। बीरबल ने जूते पहन कर आर्शीवाद दिया कि परमेश्वर आप को इस लोक और परलोक में ऐसे हजारों जूते दें।

सुनते ही अकबर खिलखिला कर हँस पड़े।

◆◆◆

बीरबल को तम्बाकू खाने की आदत थी, लेकिन अकबर बादशाह न खाते थे।

एक दिन अकबर ने तम्बाकू के खेत मे गधे को घास खाते देखकर कहा– बीरबल, ये देखो, तम्बाकू कैसी बुरी चीज है, गधे तक इसको नहीं खाते।

इस पर बीरबल ने कहा– हाँ हुजूर सच है। गधे ही तम्बाकू नहीं खाते।

◆◆◆

युगपथ चरण :

अग्र लक्ष्मी ज्योति यात्रा

अग्रवाल वंश के आदि पितामह परमपूज्य महाराजा अग्रसेन की कुलदेवी श्रीमहालक्ष्मी के वरदान से विभूषित अग्रवालों की वंश परम्परा सर्वदा अक्षुण्ण है। उन्हीं की याद में एक अग्र लक्ष्मी ज्योति यात्रा का आयोजन किया गया है जो आगामी रविवार दिनांक २९ अगस्त २०१० से किया गया है। अग्र लक्ष्मी यात्रा खड़गपुर, बांकुड़ा, पुरुलिया, झालदा, रांची, बोकारो, धनबाद, बराकर, कुल्टी, आसनसोल, बर्नपुर, रानीगंज, दुर्गापुर, सैंथिया, रामपुरहाट, साहिबगंज, कटिहार, पूर्णिया, दलखोला, किशनगंज, इस्लामपुर, सिलीगुड़ी, कार्सियांग दार्जिलिंग, गंगटोक, जौगंज, कालिंगपौंग, अलीपुरद्वार कूचबिहार, जलपाईगुड़ी, चाकुलिया, बालूरघाट, मालदा, कालियाचक, लालगोला, बेरमपुर, वर्द्धमान से होकर सिक्कीम के गैंगटोक के जोरथांग, भूटान के जैगांव का परिभ्रमण करते हुए कोलकाता में रिसड़ा, हिन्दमोटर, लिलुआ, हावड़ा साउथ, हावड़ा नर्थ, बांगूड़, लेकटाउन, साल्टलेक, काकुड़गाछी, बालीगंज एवं अलीपुर के विभिन्न क्षेत्र से होती हुई दिनांक ०८ अक्टूबर २०१० को अग्रसेन जयन्ती पर वापस आएगी।

इस अभिनव अग्र लक्ष्मी ज्योति यात्रा में आपकी सहभागिता का अनुरोध है। उपरोक्त स्थानों में जहां भी आपके परिचित बन्धु रह रहे हों, उनका नाम, पता व फोन नम्बर, सूचित करने की कृपा करें, ताकि उनसे सम्पर्क कर सकें। अग्र महालक्ष्मी ज्योति यात्रा की सफलता के लिए आपके स्नेह सहयोग के आकांक्षी।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ३ अक्टूबर से १० अक्टूबर २०१० तक महाराजा अग्रसेन जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। जिसमें महिला सम्मान कार्यक्रम, विभिन्न संगोष्ठियाँ, महालक्ष्मी भजन संध्या एवं विशाल शोभायात्रा के कार्यक्रम रहेंगे। संपर्क: श्री पुष्करलाल केडिया, प्रधान सचिव मो.९८३१६१२७२३।◆

श्री बी. के. सिंह का नागरिक अभिनन्दन

इस्टर्न कमान्ड के GOC INCHIEF श्री बी.के.सिंह के थलसेनाध्यक्ष बनने के अवसर पर हार्दिक बधाई एवम् अभिनन्दन करते हुए हरियाणा समाज के विशिष्ट नागरिक श्री बाबूलाल धनानिया अध्यक्ष हरियाणा नागरिक संघ गोपीराम बड़ोपलिया पूर्व अध्यक्ष हरियाणा भवन, सत्यनारायण गुप्ता अध्यक्ष हरियाणा भवन उम्मद सिंह चौधरी एवम् समाज सेवी गोविन्दराम अग्रवाल अध्यक्ष हरियाणा सेवा सदन।◆

पश्चिम बंगाल मारवाड़ी महिला सम्मेलन श्रीमती श्वेता टिबड़ेवाल अध्यक्ष निर्वाचित

दुर्गापुर प्रान्तीय अधिवेशन में कोलकाता मारवाड़ी महिला समिति से २०१० से २०१२ तक के लिए श्रीमती श्वेता टिबड़ेवाल को पश्चिम बंगाल मारवाड़ी महिला सम्मेलन की प्रान्तीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इससे पूर्व कोलकाता शाखा की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। इसके अतिरिक्त सचिव पद के लिए श्रीमती मंजू डोकानिया एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी सरिया को बनाया गया है। बधाई।◆

ईश्वर जैन सम्मानित

टिटिलागढ़ (उड़ीसा) की समाजसेवी संस्था समाज कल्याण परिषद के १२ वें स्थापना दिवस पर उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव ईश्वर चन्द जैन को निर्भीक पत्रकारिता व समाज सेवा के लिये परिषद की ओर से सम्मानित किया गया।◆

विजय स्मृति भवन के निर्माण

डॉ० गौतम खेड़िया एवं खेड़िया परिवार, पुरुलिया ने विकास खेड़िया मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा आयोजित उनकी तीसरी संतान विजय खेड़िया की स्मृति में विजय स्मृति भवन के निर्माण हेतु एवं एक ए०सी० बेनकेट हाल करीब ५००० स्क्वायर फुट का केदारनाथ मोहिनी देवी खेड़िया बेनकेट हाल बनवाया।◆

आलमबाजार में श्री श्याम मंदिर भूमि-पूजन

श्री श्याम मंदिर कोलकाता विश्वप्रसिद्ध दक्षिणेश्वर काली मंदिर से २ मिनट की दूरी पर आलमबाजार में उन्नीस कट्ठा भूमि पर श्री श्याम मंदिर निर्माणार्थ भूमि पूजन एवं भजन–अमृतवर्षा रविवार को भव्य रुप में मनाया गया। मदुरई से पधारे आचार्य श्री सुदामाजी महाराज के सानिध्य में सभी कार्य सम्पन्न हुए। सुनील–विनीता खेतान ने भूमि–पूजन किया। इस अवसर पर खाटूधाम के अनन्य श्याम भक्त सोहनलालजी लोहाकार, श्री श्याम मंदिर रींगस के महंत बुदरा सिंहजी महाराज, प्राचीन श्री श्याम मंदिर काठगोला के महंत संतकुमारजी शर्मा व वास्तुविद व ज्योतिषाचार्य पंडित राकेश कुमार पाण्डेय ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। पूज्य गुरुवर श्रीचन्दजी शर्मा ने आयोजन की सफलता के लिए वरद् आशीष प्रदान किया। भूमि–पूजन के पश्चात् प्रारम्भ हुए भजन–अमृतवर्षा में जयपुर से आयी मशहूर भजन गायिका उमा लहरी, ग्वालियर से आए मनोज शर्मा एवं कोलकाता के संजय मित्तल, दमोदर शर्मा, संजू शर्मा एवं अन्य गायकों व भजन मण्डलियों ने सुमधुर भजनों से भक्तों को मोह लिया। मंडल के ट्रस्टी देवेन्द्र जाजोदिया, संजय सुरेका, गणेश अग्रवाल, ट्रस्टी एवं सचिव गोविन्द मुरारी अग्रवाल, अध्यक्ष राजपाल गुप्ता, संयोजक अजीत खेतान, पकंज लुहारीवाल ने भक्तों के अपार उत्साह एवं सहयोग हेतु आभार प्रकट किया। आयोजन को सफल बनाने में विनोद अग्रवाल, गोपाल जालान, कन्हैयालाल अग्रवाल, सुरेश अग्रवाल, कैलाशचन्द्र गुप्ता,प्रकाश नाहटा, पप्पू अग्रवाल, गोपाल भावसिहका, आनन्द सराफ, बालमुकुन्द अग्रवाल, सोनू भावसिंहका, मनोहर केजड़ीवाल, विमल अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल, राहुल अग्रवाल, नवल अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, अंकुर जालान सहित अन्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन राजा अग्रवाल ने किया।◆

राजस्थान परिषद द्वारा महाप्रज्ञजी को भावभीनी श्रद्धाजंलि

कोलकाता, ११ मई, २०१०। राजस्थान परिषद की एक विशेष बैठक परिषद के अध्यक्ष शार्दूलसिंह जैन की अध्यक्षता में हुई। जिसमें आचार्य महाप्रज्ञजी के परलोक गमन पर भावभीनी श्रद्धाजंलि दी गई। परिषद के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने कहा कि महाप्रज्ञजी का चला जाना हमारे देश एवं समाज की अपूरणीय सांस्कृतिक क्षति है। अहिंसा दर्शन एवं सामाजिक सौहार्द्र स्थापित करने में उनके अवदान को सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। परिषद के महामंत्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने बताया कि वे हमारी संस्कृति के शिखर पुरुष थे और सभी धर्मो एवं सम्प्रदायों के ही नहीं, बल्कि राजनीति के भी शीर्षस्थ व्यक्ति उनसे विभिन्न समस्याओं पर मार्गदर्शन हेतु जाते थे। अर्थमंत्री श्री रुगलाल सुराणा ने कहा कि वे जैन एवं जैनेत्तर साहित्य के प्रकांड विद्वान थे एवं किसी भी विषय पर उनको सुनना नई ऊर्जा प्रदान करता था। श्री परशुराम मूंधड़ा, बंशीधर शर्मा, सम्पत मानधन्या एवं गोविन्द नारायण काकड़ा ने भी श्रद्धा अर्पित करते हुए उनके चले जाने को अपूरणीय क्षति बताया। अध्यक्ष श्री शार्दूलसिंह जैन ने महाप्रज्ञजी के साथ अपने लम्बे संबंधों की चर्चा की एवं उनके जीवन के विविध प्रेरक प्रसंग सुनाये। अंत में दो मिनट का मौन रखकर उनके चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए।◆

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, May 2010
RNI Regd. No. 2868/68

S.R. RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

T/WB/LM-007
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com